Shreemad Bhagawad Geeta: श्रीमद् - भगवद् - गीता

अथ ज्ञानकर्मसंन्यासयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥

श्री भगवान् उवाच ।

इमम् विवस्वते योगम् प्रोक्तवान् अहम् अव्ययम् ।

विवस्वान् मनवे प्राह मनुः इक्ष्वाकवे अब्रवीत् ॥ ४ - १॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान् उवाच	Shree Bhagavaana Uvaacha	The Blessed Lord said	श्री भगवान् ने कहा	श्री भगवान म्हणाले
इमम्	Imam	this	इस	हा
विवस्वते	Vivasvate	to Vivasvat (the Sun)	सूर्य से	सूर्याला
योगम्	Yogam	Yoga	योग को	योग
प्रोक्तवान्	Proktavaan	taught	कहा था	सांगितला होता
अहम्	Aham	I	मैं ने	मी
अव्ययम्	Avyayam	imperishable	अविनाशी	अविनाशी
विवस्वान्	Vivasvaan	Vivasvat	सूर्य ने	सूर्य
मनवे	Manave	to Manu	(अपने पुत्र) मनु से	(आपला मुलगा) मनूस
प्राह	Praaha	taught	कहा (और)	सांगितला
मनुः	ManuH	Manu	मनु ने	मनू
इक्ष्वाकवे	Ikshvaakave	to Ikshvaku	(अपने पुत्र) राजा इक्ष्वाकु से	(आपला मुलगा) इक्ष्वाकूला
अब्रवीत्	Abraveet	Taught	कहा	सांगितला

अन्वय :-

श्री भगवान् उवाच - अहम् इमम् अव्ययम् योगम् विवस्वते प्रोक्तवान् । विवस्वान् मनवे प्राह । मनुः इक्ष्वाकवे अब्रवीत् ॥ ४ - १॥

English translation:-

The Blessed Lord said, "I declared this imperishable Yoga to Vivasvata (the Sun). (In turn) Vivasvata taught it to Manu (the creator of Manusmruti) and Manu taught it to Ikshvaku (the father of King Dasharatha and grandfather of Lord Rama, an earlier incarnation of Lord Vishnu prior to Lord Krishna)."

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् बोले, " मैं ने इस अविनाशी योगको सूर्य से कहा था, सूर्य ने अपने पुत्र मनु को सिखाया और मनु ने अपने पुत्र राजा इक्ष्वाकु को समझाया।"

मराठी भाषान्तर :-

भगवान श्रीकृष्ण म्हणाले, " अविनाशी असा हा योग मी (पूर्वी) विवस्वानाला म्हणजेच सूर्याला सांगितला होता. हा योग सूर्याने आपल्या मुलाला - मनूला सांगितला आणि मनूने आपला मुलगा इक्ष्वाकूला सांगितला. "

विनोबांची गीताई :-

योग हा अविनाशी मी स्वयें सूर्यास बोलिलों।
मनूस बोलिला सूर्य तो ईक्ष्वाकूस त्यापरी ॥ ४ - १॥

एवम् परम्पराप्राप्तम् इमम् राजर्षयः विदुः ।

सः कालेन इह महता योगः नष्टः परन्तप ॥ ४ - २॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	याप्रमाणे
परम्पराप्राप्तम्	Paramparaa-praaptam	handed down in regular succession	परम्परा से प्राप्त	परंपरेने प्राप्त झालेला
इमम्	Imam	this	इस (योग को)	हा (योग)
राजर्षयः	RajarshayaH	the royal sages	राजर्षियों ने	राजर्षींनी
विदुः	ViduH	knew	जाना	जाणला
सः	SaH	This	वह	तो
कालेन	Kaalen	by lapse of time	काल से	काळाच्या ओघात
इह	Iha	here	इस (पृथ्वीलोक में)	या (पृथ्वीतलावरून)
महता	Mahataa	by long	बहुत	मोठ्या
योगः	YogaH	Yoga	योग	योग
नष्टः	NaShtaH	destroyed	लुप्तप्राय हो गया	(जवळ जवळ) नाहीसाच झाला
परन्तप	Parantapa	O scorcher of foes / Arjuna !	हे अर्जुन !	हे शत्रूला तापदायक अर्जुना!

अन्वय :-

हे परन्तप ! एवम् परम्पराप्राप्तम् इमम् (योगम्) राजर्षयः विदुः । सः योगः इह महता कालेन नष्टः ॥ ४ - २॥

English translation:-

O Arjuna, thus handed down in regular succession, the royal-sages knew the Yoga. This Yoga, by long lapse of time, decayed in this world and has been lost here.

हिन्दी अनुवाद :-

शत्रु को ताप देनेवाले हे अर्जुन ! इस प्रकार परम्परा से प्राप्त इस योग को राजर्षियों ने जाना परन्तु उस के बाद वह योग बहुत काल से इस पृथ्वीलोक में लुप्तप्राय हो गया ।

मराठी भाषान्तर :-

हे शत्रूला तापदायक अर्जुना ! याप्रमाणे परंपरेने प्राप्त झालेला हा योग राजर्षींनी जाणला . परंतु त्यानंतर , तो योग काळाच्या मोठ्या ओघात या पृथ्वीतलावरून (जवळ जवळ) नाहीसाच झाला .

विनोबांची गीताई :-

अशा परंपरेंतूनि हा राजर्षींस लाभला ।
पुढें काळ बळानें तो ह्या लोकीं योग लोपला ॥ ४ - २॥

सः एव अयम् मया ते अद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः ।

भक्तः असि मे सखा च इति रहस्यम् हि एतत् उत्तमम् ॥ ४ - ३॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सः	SaH	that	वह	तो
एव	Eva	even	ही	च
अयम्	Ayam	this	यह	हा
मया	Maya	by me	मैंने	मी
ते	Te	to you	तुझ को	तुला
अद्य	Adya	today	आज	आज
योगः	YogaH	Yoga	योग	योग
प्रोक्तः	ProktaH	has been taught	कहा है	सांगितला आहे
पुरातनः	PuraatanaH	ancient	पुरातन	पुरातन
भक्तः	BhaktaH	devotee	भक्त	भक्त
असि	Asi	you are	तू है / तुम हो	तू आहेस
मे	Me	my	मेरा	माझा
सखा	Sakhaa	dear friend	प्रिय मित्र	प्रिय मित्र
च	Cha	and	और	आणि
इति	Iti	thus	इसलिये	म्हणून
रहस्यम्	Rahasyam	secret	रहस्य (है)	रहस्य
हि	Hi	indeed	क्योंकि	कारण
एतत्	Etat	this	यह (योग)	हा (योग)
उत्तमम्	Uttamam	the best / supreme	बडा ही उत्तम	अतिशय उत्तम

अन्वय :-

सः एव अयम् पुरातनः योगः मया अद्य ते प्रोक्तः। (त्वम्) मे भक्तः सखा च असि इति, हि एतत् रहस्यम् उत्तमम् ॥ ४-३॥

English translation:-

The same ancient Yoga has been imparted to you by me today, for you are my devotee and a dear friend. This is the supreme secret.

हिन्दी अनुवाद :-

तुम मेरे भक्त और प्रिय मित्र हो, इसलिये वही यह पुरातन योग आज मैं ने तुम्हें बताया है; क्योंकि यह बहुत ही उत्तम रहस्यपूर्ण है।

मराठी भाषान्तर :-

तोच हा पुरातन योग आज मी तुला सांगितला आहे, कारण तू माझा भक्त व प्रिय मित्र आहेस. हा योग म्हणजे एक अतिशय उत्तम रहस्य आहे.

विनोबांची गीताई :-

तो चि हा बोलिलों आज तुज योग पुरातन।
जीवींचें गूज हें थोर तूं हि भक्त सखा तसा ॥ ४-३॥

अर्जुन उवाच ।

अपरम् भवतः जन्म परम् जन्म विवस्वतः ।

कथम् एतत् विजानीयाम् त्वम् आदौ प्रोक्तवान् इति ॥ ४ - ४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अपरम्	Aparam	later	अर्वाचीन	अगदी अलिकडचा
भवतः	BhavataH	your	आप का	तुझा
जन्म	Janma	birth	जन्म	जन्म
परम्	Param	earlier	बहुत पुराना	अतिशय प्राचीन काळचा
जन्म	Janma	birth	जन्म	जन्म
विवस्वतः	VivasvataH	of Vivasvat (the Sun)	सूर्य का	सूर्याचा
कथम्	Katham	how	कैसे	कसे
एतत्	Etat	this	यह (योग)	हा (योग)
विजानीयाम्	Vijaaneeyam	am I to understand?	मैं समझूँ ?	(हे) मी समजावे ?
त्वम्	Tvam	you	आप ही ने	तूच (त्याला हा योग)
आदौ	Aadau	in the beginning	कल्प के आदि में (सूर्य से)	कल्पारंभी (सूर्याला)
प्रोक्तवान्	Proktvaan	taught	कहा था	सांगितला
इति	Iti	this	इस बात को	असे

अन्वय :-

अर्जुन उवाच - भवतः जन्म अपरम् , विवस्वतः जन्म परम् , (अतः) त्वम् आदौ एतत् प्रोक्तवान् इति (अहम्) कथम् विजानीयाम् ? ॥ ४ - ४ ॥

English translation:-

Arjuna asked, "Later is your birth while earlier was the birth of Vivasvat (the Sun); how then am I to understand that you taught him this Yoga in the beginning of the cycle of creation?"

हिन्दी अनुवाद :-

अर्जुन बोले , " आप का जन्म तो वर्तमान कालका है और सूर्य का जन्म बहुत पुराना है अर्थात् कल्प के आदि में हो चुका था ; तब मैं इस बात को कैसे समझूँ कि आप ही ने कल्प के आदि में सूर्य से यह योग कहा था ? "

मराठी भाषान्तर :-

अर्जुनाने विचारले, " तुझा जन्म अगदी अलिकडचा व सूर्याचा अतिशय प्राचीन काळचा असे असताना , तूच त्याला हा योग कल्पारंभी सांगितला , हे मी कसे समजावे ? "

विनोबांची गीताई :-

अर्जुन म्हणाला

ह्या काळचा तुझा जन्म सुर्याचा तो पुरातन ।

तूं बोलिलास आरंभीं हें मी ज़ाणूं कसें बरें ॥ ४ - ४ ॥

श्री भगवान् उवाच ।

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव च अर्जुन ।

तानि अहम् वेद सर्वाणि न त्वम् वेत्थ परन्तप ॥ ४ - ५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान् उवाच	Shree Bhagavaana Uvaacha	The Blessed Lord said	श्री भगवान् ने कहा	श्री भगवान म्हणाले
बहूनि	Bahooni	many	बहुत से	पुष्कळ
मे	Me	my	मेरे	माझे
व्यतीतानि	Vyateetaani	have passed by	हो चुके हैं	(आतापर्यन्त) होऊन गेलेले आहेत
जन्मानि	Janmaani	births	जन्म	जन्म
तव	Tava	your	तुम्हारे	तुझे
च	Cha	and	और	आणि
अर्जुन	Arjuna	Arjun	अर्जुन	अर्जुन
तानि	Taani	them	उन	ते
अहम्	Aham	I	मैं	मी
वेद	Veda	know	जानता हूँ	जाणतो
सर्वाणि	Sarvaani	all	सब को	सर्व
न	Na	not	नहीं	नाही
त्वम्	Tvam	you	तुम	(ते) तुला (आज)
वेत्थ	Vettha	know	जानते	आठवते
परन्तप	Parantapa	O scorcher of foes / Arjuna !	हे अर्जुन !	हे शत्रूला तापदायक अर्जुना!

अन्वय :-

श्री भगवान् उवाच - हे परन्तप अर्जुन ! मे तव च बहूनि जन्मानि व्यतीतानि ; तानि सर्वाणि अहम् वेद, त्वम् न वेत्थ ।

English translation:-

The Blessed Lord answered, "O Arjuna, many births of mine and yours have passed by; I know them all while you do not know, O scorcher of foes (Arjuna)."

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान बोले, " हे अर्जुन, मेरे और तुम्हारे बहुतसे जन्म हो चुके हैं। उन सबको मैं जानता हूँ, परन्तु तुम नहीं जानते। "

मराठी भाषान्तर :-

भगवान श्रीकृष्ण म्हणाले, " हे अर्जुना, आतापर्यन्त माझे आणि तुझे पुष्कळ जन्म होऊन गेलेले आहेत. हे शत्रूला तापदायक अर्जुना, ते सर्व मी जाणतो पण ते तुला (आज) आठवत नाही ".

विनोबांची गीताई :-

श्री भगवान् म्हणाले

माझे अनेक ह्यापूर्वी झाले जन्म तसे तुझे।

ज्ञाणतों सगळे मी ते अर्जुना तूं न ज्ञाणसी ॥ ४ - ५ ॥

अजः अपि सन् अव्ययात्मा भूतानाम् ईश्वरः अपि सन् ।

प्रकृतिम् स्वाम् अधिष्ठाय सम्भवामि आत्ममायया ॥ ४ - ६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अजः	AjaH	Unborn	अजन्मा	जन्मरहित
अपि	Api	Also / even	तथा	तसेच
सन्	San	Being	होते हुए	असून सुद्धा
अव्ययात्मा	Avyayaatmaa	of imperishable nature	अविनाशीस्वरूप	अविनाशी स्वरूपाचा
भूतानाम्	Bhutanam	of beings	समस्त प्राणियों का	सर्व प्राणिमात्रांचा
ईश्वरः	IshvaraH	the Lord	ईश्वर	ईश्वर
अपि	Api	Also	भी	ही
सन्	San	Being	होते हुए	असून
प्रकृतिम्	Prakrutim	Nature	प्रकृतिको	मूळस्वरूप
स्वाम्	Svam	my own	अपनी	स्वतःचे
अधिष्ठाय	Adhishthaaya	presiding over	अधीन कर के	आपल्या ताब्यात ठेवून
सम्भवामि	Sambhavaami	come into being	प्रकट होता हूँ	(मनुष्यलोकात) जन्म घेतो
आत्ममायया	Aatma-maayayaa	By my own power (Maya)	अपनी योगमाया से	आपल्याच योगसामर्थ्याने

अन्वय :-

(अहम्) अजः अव्ययात्मा अपि सन् , भूतानाम् ईश्वरः अपि सन् , स्वाम् प्रकृतिम् अधिष्ठाय , आत्ममायया सम्भवामि ॥ ४ - ६ ॥

English translation:-

Though (I am) unborn, imperishable and the Lord of beings, yet presiding over my own natural tendencies, I am born by my own power.

हिन्दी अनुवाद :-

मैं अजन्मा और अविनाशी - स्वरुप होते हुए तथा समस्त प्राणियों का ईश्वर होते हुए भी अपनी प्रकृति को अधीन कर अपनी योगमाया से प्रकट होता हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

मी स्वतः जन्मरहित आणि अविनाशी स्वरूपाचा असून सुद्धा ; तसेच सर्व प्राणिमात्रांचा ईश्वर असूनही , स्वतःचे मूळस्वरूप आपल्या ताब्यात ठेवून , आपल्याच योगसामर्थ्याने (मनुष्यलोकात) जन्म घेतो .

विनोबांची गीताई :-

असूनि हि अजन्मा मी निर्विकार जगत् - प्रभु ।
माझी प्रकृति वेढूनि मायेनें जन्मतों ज़णूं ॥ ४ - ६ ॥

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति भारत ।

अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदा आत्मानम् सृजामि अहम् ॥ ४ - ७॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यदा यदा	Yada Yada	whenever	जब जब	जेव्हा जेव्हा
हि	Hi	indeed	ही	खरोखर
धर्मस्य	Dharmasya	of dharma /righteousness	धर्म की	धर्माचा
ग्लानिः	GlaniH	decline/ decay	हानि	ऱ्हास
भवति	Bhavati	Is	होती है	होतो
भारत	Bhaarata	O Arjuna !	हे अर्जुन !	हे भरतकुलोत्पन्न अर्जुना !
अभ्युत्थानम्	Abhytthaanam	rise	वृद्धि	प्राबल्य माजते
अधर्मस्य	Adharmasya	of Adharma/un-righteousness	अधर्म की	अधर्माचे
तदा	Tadaa	then	तब तब	तेव्हा तेव्हा
आत्मानम्	Aatmaanam	Myself	अपने रूप को	आपले वेगळेच रूप
सृजामि	Srujaami	manifest	रचता हूँ (अर्थात् साकाररूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ)	धारण करतो (म्हणजेच मनुष्यरुपात अवतार घेतो)
अहम्	Aham	I	मैं	मी

अन्वय :-

हे भारत ! यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति, अधर्मस्य अभ्युत्थानम् (भवति), तदा अहम् आत्मानम् सृजामि ॥ ४-७॥

English translation:-

O Arjuna, whenever there is indeed a decline of Dharma (righteousness) and a rise of Adharma (un- righteousness), then I manifest Myself.

हिन्दी अनुवाद :-

हे भरतवंशी अर्जुन ! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब ही मैं अपने रुप को रचता हूँ अर्थात् साकार रुप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

हे भरतकुलोत्पन्न अर्जुना, जेव्हा जेव्हा धर्माचा ऱ्हास होऊन अधर्माचे प्राबल्य माजते, तेव्हा तेव्हा मी आपले वेगळेच रूप धारण करतो आणि लोकांसमोर प्रगट होतो (म्हणजेच मनुष्यरुपात अवतार घेतो).

विनोबांची गीताई :-

गळूनि ज़ातसे धर्म ज्या ज्या वेळेस अर्जुना।
अधर्म उठतो भारी तेव्हां मी जन्म घेतसें ॥ ४-७॥

परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम् ।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ ४ - ८॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
परित्राणाय	Paritranaya	for protection	उध्दार करने के लिये	रक्षणासाठी
साधूनाम्	Sadhunam	of the virtuous	साधु पुरुषों का	सज्जनांच्या
विनाशाय	Vinashaya	for destruction	विनाश करने के लिये	नाशासाठी
च	Cha	and	और	आणि
दुष्कृताम्	Dushkrutam	of the wicked	पापकर्म करनेवालों का	पापीजनांच्या
धर्म-संस्थापनार्थाय	Dharma-Sansthapana-Arthaya	for establishment of dharma (righteousness)	धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिये मैं	धर्माची उत्तम प्रकारे स्थापना करण्यासाठी
सम्भवामि	Sambhavami	I am born	प्रकट हुआ करता हूँ	मी प्रगट होतो
युगे युगे	Yuge Yuge	in every age	युग - युग में	प्रत्येक युगात

अन्वय :-

साधूनाम् परित्राणाय, दुष्कृताम् विनाशाय धर्मसंस्थापनार्थाय च, (अहम्) युगे युगे सम्भवामि ॥ ४-८॥

English translation:-

For the protection of the virtuous, for the destruction of the wicked and for the establishment of Dharma (righteousness) I am born in every age.

हिन्दी अनुवाद :-

साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिये, पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिये और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिये मैं युग-युग में प्रकट होता हूँ।

मराठी भाषान्तर :-

सज्जनांच्या रक्षणासाठी, पापीजनांच्या नाशासाठी आणि धर्माची उत्तम प्रकारे स्थापना करण्यासाठी; मी प्रत्येक युगात प्रगट होतो.

विनोबांची गीताई :-

राखावया जगीं संतां दुष्टां दूर करावया।
स्थापावया पुन्हां धर्म जन्मतों मी युगीं युगीं ॥ ४-८॥

जन्म कर्म च मे दिव्यम् एवम् यः वेत्ति तत्त्वतः ।

त्यक्-त्वा देहम् पुनः जन्म न एति माम् एति सः अर्जुन ॥ ४-९॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
जन्म	Janma	birth	जन्म	जन्म
कर्म	Karma	action	कर्म	कार्य
च	Cha	and	और	आणि
मे	Me	my	मेरे	माझा
दिव्यम्	Divyam	divine	दिव्य	अलौकिक
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
यः	YaH	who	जो (मनुष्य)	जो (मनुष्य)
वेत्ति	Vetti	knows	जान लेता है	जाणतो
तत्त्वतः	tattvataH	in true light	तत्त्व से	यथार्थपणे
त्यक्-त्वा	Tyaktva	having abandoned	त्यागकर	त्याग केल्यावर
देहम्	Deham	body	शरीर को	शरीराचा
पुनः	PunaH	again	फिर	पुन्हा
जन्म	Janma	birth	जन्म	जन्म
न	Na	not	नहीं	नाही
एति	Eti	gets	प्राप्त होता	प्राप्त होतो
माम्	Maam	to me	मुझे (ही)	मला
एति	Eti	comes	प्राप्त होता है	येऊन मिळतो
सः	SaH	he	वह	तो
अर्जुन	Arjun	O Arjuna !	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :-

हे अर्जुन ! यः मे दिव्यम् जन्म कर्म च एवम् तत्त्वतः वेत्ति, सः देहम् त्यक्त्वा , पुनः जन्म न एति, (किन्तु सः) माम् एति ॥ ४ - ९॥

English translation:-

O Arjuna, he who knows thus My divine birth and action in true light, having abandoned the (physical) body, is not born again but he comes to Me.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं – इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्व से जान लेता है, वह शरीर को त्यागकर फिर जन्म को प्राप्त नही होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना, अशाप्रकारे माझा अलौकिक जन्म आणि माझे अलौकिक कार्य जो यथार्थपणे जाणतो ; तो मृत्युनंतर (शरीराचा त्याग केल्यावर) पुन्हा जन्मास न येता, मलाच येऊन मिळतो.

विनोबांची गीताई :-

जन्म कर्मे अशीं दिव्य जो माझीं नीट ओळखे।

देह गेल्या पुन्हां जन्म न पावे भेटुनी मज ॥ ४ - ९॥

वीतरागभयक्रोधाः मन्मयाः माम् उपाश्रिताः ।

बहवः ज्ञानतपसा पूताः मद्भावम् आगताः ॥ ४ - १० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
वीत-रागभयक्रोधाः	Vita-Raga-Bhaya-KrodhaaH	freed from attachment, fear and anger	जिन के प्रीति, भय और क्रोध सर्वथा नष्ट हो गये थे (और)	प्रीती , भय आणि क्रोधरहित झालेले
मन्मयाः	ManmayaaH	absorbed in Me	जो मुझ में अनन्य प्रेमपूर्वक स्थित रहते थे (ऐसे)	अनन्य भावाने एकरूप झालेले
माम्	Maam	in Me	मेरे	माझ्या (स्वरूपाशी)
उपाश्रिताः	UpaashritaaH	having taken refuge in Me	आश्रित रहनेवाले	माझ्या आश्रयास आलेले
बहवः	BahavaH	Many	बहुत से (भक्त)	अनेक (साधक)
ज्ञानतपसा	Dnyaan-TapasaaH	by fire of knowledge	ज्ञानरूप तप से	ज्ञानरूपी तपाने
पूताः	PutaaH	purified	पवित्र होकर	पवित्र झालेले
मद्भावम्	Mad-Bhavam	my Being	मेरे स्वरूप को	माझ्याच स्वरूपाला
आगताः	AagataaH	have attained	प्राप्त हो चुके हैं	येऊन मिळालेले आहेत

अन्वय :-

वीतरागभयक्रोधाः , मन्मयाः , माम् उपाश्रिताः , ज्ञानतपसा पूताः , बहवः मद्भावम् आगताः ॥ ४ - १० ॥

English translation:-

Freed from passion, fear and anger, absorbed in Me, taking refuge in Me, purified by the fire of knowledge, many have attained my Being.

हिन्दी अनुवाद :-

जिनके राग , भय और क्रोध इत्यादि दोष सर्वथा नष्ट हो गये थे और जो मुझ में अनन्य प्रेमपूर्वक स्थित रहते थे , ऐसे मेरे आश्रित रहनेवाले बहुत से भक्त पूर्वकाल में भी उपर्युक्त ज्ञानरुप तप से पवित्र होकर मेरे स्वरुप को प्राप्त हो चुके हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

प्रीती , भय आणि क्रोधरहित झालेले , अनन्य भावाने माझ्या स्वरूपाशी एकरूप झालेले ; माझ्या आश्रयास आलेले आणि ज्ञानरूपी तपाने पवित्र झालेले , अनेक साधक माझ्याच स्वरूपाला येऊन मिळालेले आहेत .

विनोबांची गीताई :-

नाही तृष्णा भय क्रोध माझ्या सेवेंत तन्मय ।
झाले ज्ञान तपें चोख अनेक मज़ पावले ॥ ४ - १० ॥

ये यथा माम् प्रपद्यन्ते तान् तथा एव भजामि अहम् ।

मम वर्त्म अनुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ ४ - ११॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ये	Ye	who	जो (भक्त)	जे (भक्त)
यथा	Yatha	in whatever way	जिस प्रकार	ज्या प्रकाराने
माम्	Maam	me	मुझे	मला
प्रपद्यन्ते	Prapadyante	approaches	भजते हैं	भजतात
तान्	Taan	them	उन को	त्यांना
तथा	Tatha	in the same way	उसी प्रकार	त्याच प्रकाराने
एव	Eva	even	केवल	केवळ
भजामि	Bhajami	bestow / reward	भजता हूँ	भजतो
अहम्	Aham	I	मैं	मी
मम	Mama	My	मेरे (ही)	माझ्याच
वर्त्म	Vartma	path	मार्ग का	मार्ग (मार्गाचे)
अनुवर्तन्ते	Anuvartante	follow	अनुसरण करते हैं	अनुसरण करतात
मनुष्याः	ManushyaaH	men	सभी मनुष्य	सर्व माणसे
पार्थ	Paartha	O Arjuna !	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
सर्वशः	SarvashaH	in all ways	सब प्रकार से	सर्व प्रकारांनी

अन्वय :-

ये यथा माम् प्रपद्यन्ते , तान् तथा एव अहम् भजामि । हे पार्थ ! मनुष्याः सर्वशः मम् वर्त्म अनुवर्तन्ते ॥ ४ - ११ ॥

English translation:-

O Arjuna, in whatever way, men approach Me, in the same way even I fulfill their desires. Men tread My path, in all ways.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जो भक्त मुझे जिस प्रकार से भजते हैं , मैं भी उन को उसीप्रकार से भजता हूँ ; क्योंकि सभी मनुष्य सब प्रकार से मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना , जे भक्त मला ज्या इच्छेने भजतात त्याप्रमाणे मी त्यांना फळ देतो . सर्वजण सर्वप्रकारे माझाच मार्ग अनुसरतात .

विनोबांची गीताई :-

भजती मज जे जैसे भजें तैसा चि त्यांस मी ।
माझ्या मार्गास हे येती लोक कोणीकडूनि हि ॥ ४ - ११ ॥

काङ्क्षन्तः कर्मणाम् सिद्धिम् यजन्ते इह देवताः ।

क्षिप्रम् हि मानुषे लोके सिद्धिः भवति कर्मजा ॥ ४ - १२॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
काङ्क्षन्तः	KankshantaH	longing for	चाहनेवाले लोग	इच्छा करणारे लोक
कर्मणाम्	Karmanaam	of action	कर्मों के	कर्मांच्या
सिद्धिम्	Siddhim	success	फल को	फळाची
यजन्ते	Yajante	sacrifice	पूजन किया करते हैं	पूजन करतात
इह	Iha	here (in this world)	इस	या
देवताः	DevataaH	Gods	देवताओं का	देवतांचे
क्षिप्रम्	Kshipram	quickly	शीघ्र	शीघ्र
हि	Hi	indeed	क्योंकि (उन को)	कारण (त्यांना)
मानुषे	Maanushe	in the human	मनुष्य	मनुष्यांच्या
लोके	Loke	in (the) world	लोक में	लोकात
सिद्धिः	SiddhiH	success	सिद्धि	सिद्धी
भवति	Bhavati	is (attained)	मिल जाती है	मिळून जाते
कर्मजा	Karmajaa	born of action	कर्मों से उत्पन्न होनेवाली	कर्मांपासून उत्पन्न होणारी

अन्वय :-

कर्मणाम् सिद्धिम् काङ्क्षन्तः (मनुष्याः) इह देवताः यजन्ते; हि मानुषे लोके कर्मजा सिद्धिः क्षिप्रम् भवति ॥ ४ - १२॥

English translation:-

Longing for success in action on earth, they worship gods; as indeed quick success is born of action on this earth.

हिन्दी अनुवाद :-

इस मनुष्यलोक में कर्मों के फल को चाहनेवाले लोग देवताओं का पूजन किया करते हैं; क्योंकि उन मनुष्यों को कर्मों से उत्पन्न होनेवाली सिद्धि, शीघ्र मिल जाती है।

मराठी भाषान्तर :-

कर्मफळाची इच्छा करणारे लोक इतर देवतांची पूजा करतात; कारण त्यांना या मनुष्यलोकात कर्माचे फळ सत्वर मिळते.

विनोबांची गीताई :-

ज़े कर्म - सिद्धि वांछूनि यजिती तेथ दैवतें।
मनुष्य लोकीं कर्माचे पावती शीघ्र ते ॥ ४ - १२॥

चातुर्वर्ण्यम् मया सृष्टम् गुणकर्मविभागशः ।

तस्य कर्तारम् अपि माम् विद्धि अकर्तारम् अव्ययम् ॥ ४ - १३॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
चातुर्वर्ण्यम्	Chaatur-Varnyam	four fold caste	(ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन) चार वर्णों का समूह	चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र)
मया	Maya	By Me	मेरे द्वारा	माझ्याकडून
सृष्टम्	Srushtam	has been created	रचा गया है	निर्माण केले आहेत
गुणकर्म-विभागशः	Gunakarma -Vibhaga-shaH	according to differentiation of Guna (quality) and Karma (action)	गुण और कर्मों के विभागपूर्वक	गुण आणि कर्म यांच्या विभागानुसार
तस्य	Tasya	of it	उस का	त्याचा (सृष्टि -रचना इत्यादी कर्मांचा)
कर्तारम्	Kartaaram	author	कर्ता (होनेपर)	कर्ता
अपि	Api	even	भी	असून सुद्धा
माम्	Maam	Me	मुझे	मला
विद्धि	Viddhi	know	तुम समझो	(असे) तू जाण
अकर्तारम्	Akartaaram	non-doer	अकर्ता (ही)	अकर्ताच (आहे)
अव्ययम्	Avyayam	immutable	अविनाशी परमेश्वर को (वास्तव में)	अविनाशी परमात्मा (खरे पाहता)

अन्वय :-

मया गुणकर्मविभागशः चातुर्वर्ण्यम् सृष्टम् , तस्य कर्तारम् अपि माम् अव्ययम् अकर्तारम् विद्धि ॥ ४ - १३॥

English translation:-

The four-fold caste system was created by Me according to the differentiation of Guna (quality) and Karma (action). Though I am its author, know Me to be the non-doer and immutable.

हिन्दी अनुवाद :-

ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों का समूह गुण और कर्मों के विभागपूर्वक मेरे द्वारा रचा गया है । इस प्रकार उस सृष्टि रचनादि कर्म का कर्ता होनेपर भी मुझ अविनाशी परमेश्वर को , तुम वास्तवमें अकर्ता ही समझो ।

मराठी भाषान्तर :-

गुणांच्या आणि कार्यांच्या विभागाप्रमाणे (ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य व शूद्र ह्या) चार वर्णांची व्यवस्था मीच निर्माण केली आहे . मी तिचा कर्ता असूनही , अकर्ता (आहे) व (त्यामुळेच) अविनाशी आहे असे तू जाण .

विनोबांची गीताई :-

निर्मिले वर्ण मीं चारी गुण कर्मे विभागुनी ।
करुनि सर्व हें ज़ाण अकर्ता निर्विकार मी ॥ ४ - १३॥

न माम् कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा ।

इति माम् यः अभिजानाति कर्मभिः न सः बध्यते ॥ ४ - १४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाही
माम्	Maam	Me	मुझे	मला
कर्माणि	Karmani	actions	कर्म	कर्मे
लिम्पन्ति	Limpanti	taint	लिप्त करते	लिप्त करतात
न	Na	not	नहीं	नाही
मे	Me	my	मेरी	माझी
कर्मफले	Karmaphale	in fruit of action	कर्मों के फल में	कर्मांच्या फळांमध्ये
स्पृहा	Spruhaa	desire	अभिलाषा	आसक्ती / लालसा
इति	Iti	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
माम्	Maam	Me	मुझे	मला
यः	YaH	who	जो	जो
अभिजानाति	Abijaanaati	knows	तत्त्व से जान लेता है	तत्त्वतः जाणून घेतो
कर्मभिः	KarmabhiH	by actions	कर्मों से	कर्मांनी
न	Na	not	नहीं	नाही
सः	SaH	he	वह (भी)	तो (सुद्धा)
बध्यते	Badhyate	is bound	बँधता	बांधला जातो

अन्वय :-

कर्मफले मे स्पृहा न, (अतः) कर्माणि माम् न लिम्पन्ति। इति यः माम् अभिजानाति , सः कर्मभिः न बध्यते ॥ ४ - १४ ॥

English translation:-

Actions do not taint Me nor have I a desire for the fruit of action. He who knows Me thus is not bound by actions.

हिन्दी अनुवाद :-

कर्मों के फल में मेरी लालसा नहीं है इसलिये मुझे कर्म लिप्त नहीं करते। इस प्रकार जो मुझे तत्त्व से जान लेता है वह भी कर्मों से नहीं बँधता।

मराठी भाषान्तर :-

कर्मफळाच्या ठायी माझी लालसा नाही म्हणून कर्माचा लेप म्हणजे बाधा मला होत नाही. याप्रमाणे जो मला यथार्थपणे जाणतो, तोही कर्मांनी बांधला जात नाही.

विनोबांची गीताई :-

कर्मे न बांधिती मातें फळीं इच्छा नसे मज़। माझें स्वरूप हें ज़ाणे तो कर्मांत हि मोकळा ॥ ४ - १४ ॥

एवम् ज्ञात्वा कृतम् कर्म पूर्वैः अपि मुमुक्षुभिः ।

कुरु कर्म एव तस्मात् त्वम् पूर्वैः पूर्वतरम् कृतम् ॥ ४ - १५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
ज्ञात्वा	Dnyaatvaa	having known	जानकर ही	जाणून
कृतम्	Krutam	was done	किये हैं	केलेले
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
पूर्वैः	PurvaiH	by ancients	पूर्वकाल के	पूर्वकालीन
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
मुमुक्षुभिः	Mumu-kshubhiH	seekers of liberation	मोक्ष की इच्छा करनेवाले साधकों ने	मोक्षाची इच्छा करणाऱ्याकडून
कुरु	Kuru	perform	करो	कर
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्मे
एव	Eva	even	ही	सुद्धा
तस्मात्	Tasmaat	therefore	इसलिये	म्हणून
त्वम्	Tvam	you	तुम	तू
पूर्वैः	PurvaiH	by ancients	पूर्वजों द्वारा	पूर्वजांनी
पूर्वतरम्	Purvataram	in olden times	पूर्वपरंपरा से तथा नित्य	परंपरेने (नेहमी)
कृतम्	Krutam	done	किये जानेवाले	केलेली

अन्वय :-

एवम् ज्ञात्वा पूर्वैः मुमुक्षुभिः अपि कर्म कृतम् । तस्मात् त्वम् पूर्वैः पूर्वतरम् कृतम् एव कर्म कुरु ॥ ४ - १५ ॥

English translation:-

Having known thus, action was performed even by the ancient seekers of liberation. Therefore, you should also perform action as the ancients did in olden times.

हिन्दी अनुवाद :-

पूर्वकाल में मोक्ष की अपेक्षा करनेवाले साधकों ने भी इस रहस्य को जानकर ही कर्म किये थे। इसलिये, तुम भी अपने कर्मों का आचरण उन्हीं की तरह करो।

मराठी भाषान्तर :-

याप्रमाणे आत्मस्वरूप जाणून प्राचीन काळच्या, मोक्ष्याची इच्छा करणाऱ्यांनी कार्य केले. म्हणून पूर्वीच्या साधकांनी केलेल्या कर्माप्रमाणे, तू सुद्धा कर्म कर.

विनोबांची गीताई :-

केलीं कर्में मुमुक्षूंनीं पूर्वीं हें तत्त्व जाणुनी।
तैसीं तूं हि करीं कर्में त्यांचा घेऊनि तो धडा ॥ ४ - १५ ॥

किम् कर्म किम् अकर्म इति कवयः अपि अत्र मोहिताः ।

तत् ते कर्म प्रवक्षामि यत् ज्ञात्वा मोक्ष्यसे अशुभात् ॥ ४ - १६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
किम्	Kim	what	क्या है ?	काय (आहे ?)
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
किम्	Kim	what	क्या है ?	काय (आहे ?)
अकर्म	Akarma	inaction	अकर्म (विपरीत कर्म)	अकर्म (विपरीत कर्म)
इति	Iti	thus	इस प्रकार (इस का)	या बाबतीत
कवयः	KavayaH	the wise	बुद्धिमान् पुरुष	बुद्धिमान पुरुष
अपि	Api	even	भी	सुद्धा
अत्र	Atra	here	यहाँ (निर्णय करने में)	येथे (निर्णय करण्यामध्ये)
मोहिताः	MohitaaH	deluded	मोहित हो जाते हैं (इसलिये)	मोहित होऊन जातात (म्हणून)
तत्	Tat	that / therefore	वह	ते
ते	Te	to you	तुझे	तुला
कर्म	Karma	action	कर्म-तत्त्व	कर्म (तत्त्व)
प्रवक्षामि	Pra-vakshaami	(I) shall declare / teach	मैं भलीभाँति समझाकर कहूँगा	मी नीटपणे समजावून सांगेन
यत्	Yat	which	जिसे	जे
ज्ञात्वा	Dnyaatvaa	having known	जानकर	जाणल्यावर
मोक्ष्यसे	Mokshyase	(you) will be liberated	(तुम) मुक्त हो जाओगे	(तू) मुक्त होशील
अशुभात्	Ashubhaat	from evil	अशुभ से (अर्थात् कर्मबंधन से)	अशुभापासून (म्हणजे कर्मबंधनातून)

अन्वय :- " किम् कर्म , किम् अकर्म " इति अत्र कवयः अपि मोहिताः । तत् कर्म ते प्रवक्षामि , यत् ज्ञात्वा अशुभात् मोक्ष्यसे ॥ ४ - १६॥

English translation:-

Here, even the wise are deluded - as to what is action and what is inaction. Therefore, I shall teach you action, knowing which you will be liberated from evil.

हिन्दी अनुवाद :-

कर्म क्या है ? और अकर्म क्या है ? इस प्रकार , इसका निर्णय करने में बुद्धिमान पुरुष भी मोहित हो जाते हैं । इसलिये वह कर्मतत्त्व , मैं तुझे भलीभाँति समझाकर कहूँगा , जिसे जानकर तुम अशुभ से अर्थात् कर्मबन्धन से मुक्त हो जाओगे ।

मराठी भाषान्तर :-

कर्म म्हणजे काय व अकर्म म्हणजे काय याच्या (निर्णय करण्याच्या) बाबतीत बुद्धिमान पुरूषही संभ्रमात पडतात . म्हणून ते कर्माचे तत्त्व मी तुला नीट समजावून सांगेन . ते कळले की , तू पापापासून म्हणजेच कर्मबंधनातून मुक्त होशील .

विनोबांची गीताई :-

नेणती ज्ञाणते ते हि काय कर्म अकर्म हें ।

तुज तें सांगतों कर्म ज्ञाणूनि सुटशील जें ॥ ४ - १६॥

कर्मणः हि अपि बोध्दव्यम् बोध्दव्यम् च विकर्मणः ।

अकर्मणः च बोध्दव्यम् गहना कर्मणः गतिः ॥ ४ - १७॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कर्मणः	KarmanaH	of action	कर्म का स्वरूप	कर्माचे स्वरूप
हि	Hi	verily / for	क्योंकि	कारण
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
बोध्दव्यम्	Boddhavyam	should be known	जानना चाहिये	जाणले पाहिजे
बोध्दव्यम्	Boddhavyam	should be known	जानना चाहिये	जाणले पाहिजे
च	Cha	and	और	आणि
विकर्मणः	VikarmanaH	of forbidden action	विपरीत कर्म का स्वरूप भी	विपरीत कर्माचे स्वरूप (सुद्धा)
अकर्मणः	AkarmanaH	of inaction	अकर्म का स्वरूप भी	कर्म न करण्याचे स्वरूप (सुद्धा)
च	Cha	and	तथा	तसेच
बोध्दव्यम्	Boddhavyam	should be known	जानना चाहिये	जाणले पाहिजे
गहना	Gahanaa	deep	गहन है	गूढ आहे
कर्मणः	KarmanaH	of action	कर्म की	कर्माची
गतिः	GatiH	the nature / the path	गति	गती

अन्वय :-

कर्मणः (तत्त्वम्) हि अपि बोध्दव्यम् , विकर्मणः च (तत्त्वम्) बोध्दव्यम् , अकर्मणः च (तत्त्वम्) बोध्दव्यम् , कर्मणः गतिः गहना ॥ ४ - १७॥

English translation:-

It is necessary to discriminate action from inaction and action from forbidden action. The nature of action is inscrutable / impenetrable.

हिन्दी अनुवाद :-

कर्म का स्वरूप भी जानना चाहिये और अकर्म का स्वरूप भी जानना चाहिये तथा विकर्म का स्वरूप भी जानना चाहिये ; क्योंकि कर्म की गति गहन है ।

मराठी भाषान्तर :-

कर्म म्हणजे काय विकर्म (विपरीत कर्म) म्हणजे काय आणि अकर्म (कर्म न करणे) म्हणजे काय हे सर्व जाणले पाहिजे ; कारण कर्माचे तात्त्विक स्वरूप समजण्यास गूढ म्हणजेच कठीण आहे .

विनोबांची गीताई :-

सामान्य कर्म ज्ञाणावें विकर्म विशेष ज्ञें ।

अकर्म तें हि ज्ञाणावें कर्माचें तत्त्व खोल हें ॥ ४ - १७॥

कर्मणि अकर्म यः पश्येत् अकर्मणि च कर्म यः ।

सः बुध्दिमान् मनुष्येषु सः युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥ ४ - १८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कर्मणि	Karmani	in action	कर्ममें	कर्मामध्ये
अकर्म	AkarmaH	inaction	अकर्म	अकर्म (कर्म न करणे)
यः	YaH	who	जो	जो (मनुष्य)
पश्येत्	Pashyet	would see	देखता है	पाहतो
अकर्मणि	Akarmani	in inaction	अकर्ममें	अकर्मात
च	Cha	and	और	आणि
कर्म	Karma	action	कर्म देखता है	कर्म पाहतो
यः	YaH	who	जो	जो (मनुष्य)
सः	SaH	he	वह	तो (मनुष्य)
बुध्दिमान्	Buddhimaan	wise	बुध्दिमान्	बुद्धिमान (आहे)
मनुष्येषु	Manushyeshu	among men	मनुष्यों में	मनुष्यांमध्ये
सः	SaH	he	वह	(आणि) तो (मनुष्य)
युक्तः	YuktaH	Yogi	योगी	योगी
कृत्स्नकर्मकृत्	Krutsna-karmakruta	performer of all actions	समस्त कर्मों को करनेवाला है	सर्व कर्मे करणारा (आहे)

अन्वय :-

यः कर्मणि अकर्म पश्येत् , अकर्मणि च यः कर्म (पश्येत्) ; सः मनुष्येषु बुध्दिमान् , सः युक्तः , (सः) कृत्स्नकर्मकृत् ॥ ४ - १८ ॥

English translation:-

He, who sees inaction in action and action in inaction, is wise among men. He is a Yogi and yet accomplisher of everything via various actions.

हिन्दी अनुवाद :-

जो मनुष्य कर्म में अकर्म देखता है और जो अकर्म में कर्म देखता है वह मनुष्यों में बुद्धिमान् है और वह योगी समस्त कर्मों को करनेवाला है।

मराठी भाषान्तर :-

जो विवेकी पुरुष कर्माच्या (शरीर , इंद्रिय आणि प्राण यांच्या हालचालीत) ठायी अकर्म (आत्म्याचे अकर्तृत्व) पाहतो व जो अकर्मात (काहीही न करता बसणे या अवस्थेत) कर्म (आत्म्याचे कर्तृत्व) पाहतो तो सर्व मनुष्यांमध्ये ज्ञानी , योगी व सर्व कर्मे यथार्थपणे करणारा होय .

विनोबांची गीताई :-

कर्मीं अकर्म ज़ो पाहे अकर्मीं कर्म ज़ो तसें।
तो बुद्धिमंत लोकांत तो योगी कृत - कृत्य तो ॥ ४ - १८ ॥

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः ।

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणम् तम् आहुः पण्डितम् बुधाः ॥ ४ - १९॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यस्य	Yasya	whose	जिस के	ज्याची
सर्वे	Sarve	all	सम्पूर्ण (शात्रसम्मत)	सर्व (शात्रसंमत)
समारम्भाः	Samaa-rambhaa	undertakings	कर्म	कर्मे
काम-सङ्कल्प-वर्जिताः	Kaama-Sankalpa-VarjitaaH	free from desire and purposes / expectations	बिना कामना और संकल्प के होते हैं (तथा)	कामना व संकल्प यांच्या विना असतात (तसेच)
ज्ञानाग्नि-दग्धकर्माणम्	Dnyaanagni-Dagdha-Karmaanam	whose actions are burnt by fire of knowledge	जिस के समस्त कर्म ज्ञानरूप अग्नि के द्वारा भस्म हो गये हैं	ज्याची सर्व कर्मे ज्ञानरूपी अग्नीने भस्म झालेली असतात
तम्	Tam	him	उस (महापुरूष को)	त्या (महापुरुषाला)
आहुः	AahuH	call	कहते हैं	म्हणतात
पण्डितम्	PaNDitam	sage	पण्डित	पंडित
बुधाः	BudhaaH	wise	ज्ञानीजन (भी)	ज्ञानी

अन्वय :-

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः , तम् ज्ञानाग्निदग्धकर्माणम् बुधाः पण्डितम् आहुः ॥ ४ - १९॥

English translation:-

Whose undertakings are devoid of design and desire for results; whose actions are burnt by the fire of knowledge, the sages call him a wise person.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस के सम्पूर्ण शास्त्रसम्मत कर्म बिना कामना और संकल्प के होते हैं तथा जिस के समस्त कर्म ज्ञानरूप अग्नि के द्वारा भस्म हो गये हैं उस महापुरुष को ज्ञानीजन पण्डित कहते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याच्या सर्व कर्मांचा (उद्योगांचा) आरंभ फलेच्छारहित आणि संकल्परहित असतो आणि ज्याची कर्मे ज्ञानरूपी अग्नीने जळून खाक झालेली असतात ; अशा पुरुषाला ज्ञानीजन (ब्रह्मवेत्ते) ' पंडित ' म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

उद्योग करितो सारे काम संकल्प सोडुनी।
ज्ञानानें ज़ाळिलीं कर्में म्हणती त्यास पंडित ॥ ४ - १९ ॥

त्यक्-त्वा कर्मफलासङ्गम् नित्यतृप्तः निराश्रयः ।

कर्मणि अभिप्रवृतः अपि न एव किञ्चित् करोति सः ॥ ४ - २० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
त्यक्-त्वा	Tyaktvaa	having abandoned / renounced	त्याग कर के	(सम्पूर्णपणे) सोडून देऊन
कर्म-फलासङ्गम्	Karma-Phalaa-Sangam	Attachment to fruits of action	समस्त कर्मों में और उनके फल में आसक्ति का (सर्वथा)	सर्व कर्मे आणि त्यांची फळे यातील आसक्ती
नित्यतृप्तः	Nitya-TruptaH	ever content	(परमात्मा में) नित्य तृप्त (है)	(परमात्म्यामध्ये) नित्यतृप्त (आहे)
निराश्रयः	Nira-AashrayaH	without dependence	संसार के आश्रय से रहित हो गया है (और)	भौतिक आश्रयाने रहित झालेला आहे (आणि)
कर्मणि	Karmani	in action	कर्मों में	कर्मांमध्ये
अभिप्रवृतः	Abhi-PravruttaH	engaged	भलिभाँति बरतता हुआ	व्यवस्थितपणे वावरत असताना
अपि	Api	also	भी वास्तव में	ही (वस्तुतः)
न	Na	not	नहीं	नाही
एव	Eva	even	भी	ही
किञ्चित्	Kinchit	anything	कुछ	काही
करोति	Karoti	does	करता	करतो
सः	SaH	he	वह	तो

अन्वय :-

(यः) कर्मफलासङ्गम् त्यक्त्वा नित्यतृप्तः निराश्रयः , सः कर्मणि अभिप्रवृतः अपि न एव किञ्चित् करोति ॥ ४ - २० ॥

English translation:-

Having renounced attachment of fruits of action, ever content, depending upon nothing (in this world), he does not do anything even though he is (always) engaged in action.

हिन्दी अनुवाद :-

जो मनुष्य समस्त कर्मों में और उनके फल में आसक्ति का सर्वथा त्याग कर संसार के आश्रय से रहित हो गया है और परमात्मा में नित्य तृप्त है , वह कर्मों में भलीभाँति बर्तता हुआ भी वास्तव में कुछ भी नहीं करता ।

मराठी भाषान्तर :-

जो पुरुष कर्मांविषयी अभिमान व फलाविषयी लालसा सोडून , परमात्मस्वरूपात सदा समाधानी व दुसऱ्याच्या आश्रयाशिवाय (आपल्या सामर्थ्यावरच अवलंबून) राहतो ; तो कर्मांमध्ये उत्तम प्रकारे वावरत असूनही वास्तविक काहीच करीत नाही .

विनोबांची गीताई :-

नित्य - तृप्त निराधार न राखे फल वासना ।
गेला कर्मांत तरी कांहीं करी चि ना ॥ ४ - २० ॥

निराशीः यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः ।

शारीरम् केवलम् कर्म कुर्वन् न आप्नोति किल्बिषम् ॥ ४ - २१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
निराशीः	NirashiH	without hope	आशारहित पुरुष	आशारहित , निरिच्छ (सांख्ययोगी)
यतचित्तात्मा	Yatchittatma	One with mind and self (body) controlled	जिस का अन्तःकरण और इन्द्रियों के सहित शरीर जीता हुआ है (और)	ज्याने आपले अन्तःकरण आणि इंद्रियांसहित शरीर जिंकले आहे (तसेच)
त्यक्त-सर्वपरिग्रहः	Tyakta-Sarva-ParigrahaH	having relinquished all possessions	जिस ने समस्त भोगों की सामग्री का परित्याग कर दिया है ऐसा	सर्व भोगसाधनांचा ज्याने परित्याग केला आहे
शारीरम्	Shaareeram	bodily	शरीर सम्बन्धी	शरीर संबंधी
केवलम्	Kevalam	merely	केवल	केवळ
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
कुर्वन्	Kurvan	doing	करता हुआ	करीत असताना
न	Na	not	नहीं	नाही
आप्नोति	Aapnoti	obtains	प्राप्त होता	प्राप्त होते
किल्बिषम्	Kilbisham	sin	पाप को	पाप (त्याला)

अन्वय :-

निराशीः यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः , केवलम् शारीरम् कर्म कुर्वन् किल्बिषम् न आप्नोति ॥ ४ - २१॥

English translation:-

Hoping for naught, with mind and physical body totally under control, having relinquished all possessions, doing merely bodily action, he incurs no sin.

हिन्दी अनुवाद :-

जिसका अन्तःकरण और इन्द्रियों से सहित शरीर जीता हुआ है और जिसने समस्त भोगों की सामग्री का परित्याग कर दिया है ऐसा आशारहित पुरुष केवल शरीर सम्बन्धी कर्म करता हुआ भी पापों को नहीं प्राप्त होता।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याच्या अंतःकरणातून इच्छा गळून पडलेल्या असून ज्याने आपले शरीर व अंतःकरण ताब्यात ठेवले आहे आणि सर्व भोगसाधनांचा त्याग केलेला आहे, अशा त्या साधकाने केवळ शरीराने कर्म केले तरीही त्याला पाप लागत नाही.

विनोबांची गीताई :-

संयमी सोडुनी सर्व इच्छेसह परिग्रह।
शरीरें चि करी कर्म दोष त्यास न लागतो ॥ ४ - २१॥

यदृच्छालाभसन्तुष्टः द्वन्द्वातीतः विमत्सरः।

समः सिध्दौ असिध्दौ च कृत्वा अपि न निबध्यते ॥ ४ - २२॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यदृच्छा-लाभसन्तुष्टः	Yadruchchha-Labha-SantushthaH	content with whatever got unsought	जो बिना इच्छा के अपने आप प्राप्त हुए पदार्थ में सदा संतुष्ट रहता है	जो पुरुष (इच्छा न करता) आपोआप प्राप्त झालेल्या पदार्थांमध्ये संतुष्ट राहतो
द्वन्द्वातीतः	Dvandaa-teetaH	gone beyond the pairs of opposites	जो हर्ष - शोक आदि द्वन्दों से सर्वथा अतीत हो	जो हर्ष शोक इत्यादी द्वंद्वांच्या पलीकडे गेला आहे
विमत्सरः	VimatsaraH	free from envy	जिस में ईर्ष्या का सर्वथा अभाव हो गया है	(ज्याच्या ठिकाणी ईर्ष्येचा संपूर्ण अभाव झालेला आहे) मत्सररहित
समः	SamaH	even minded	समत्व भाव से रहनेवाला कर्मयोगी (कर्म)	समतोल राहाणारा (कर्मयोगी)
सिध्दौ	Siddhau	in success	यश में	यशात
असिध्दौ	A- Siddhau	in failure	अपयश में	अपयशात
च	Cha	and	और	आणि
कृत्वा	Krutvaa	acting	करता हुआ (उन से)	कर्म करीत असताना
अपि	Api	even	भी	सुद्धा (त्या कर्मांनी)
न	Na	not	नहीं	नाही
निबध्यते	Nibadhyate	is bound	बँधता	बद्ध होतो

अन्वय :-

यदृच्छा लाभसन्तुष्टः द्वन्द्वातीतः विमत्सरः सिध्दौ असिध्दौ च समः, कृत्वा अपि न निबध्यते ॥ ४ - २२॥

English translation:-

Content with whatever is received unsought, rising above the pairs of opposites, free from envy, equanimous in success and failure, though performing actions he is not bound.

हिन्दी अनुवाद :-

जो बिना इच्छा के अपने आप प्राप्त हुए पदार्थ में सदा सन्तुष्ट रहता है, जिस में ईर्ष्या का सर्वथा अभाव हो गया है, जो हर्ष-शोक आदि द्वन्दों से सर्वथा अतीत हो गया है, ऐसा सिद्धि और असिद्धि में सम रहनेवाला कर्मयोगी कर्म करता हुआ भी उन से नहीं बँधता।

मराठी भाषान्तर :-

न मागता जे मिळेल त्यात संतुष्ट राहणारा, शीत-उष्ण, सुख-दुःख इत्यादी द्वंदापलीकडे गेलेला, कोणाचाही द्वेष न करणारा, यशात व अपयशात समतोल राखणारा (आनंद व दुःख न मानणारा), (शरीरस्थितीला अवश्य असे) कर्म करूनही, कर्माने बांधला जात नाही.

विनोबांची गीताई :-

मिळे तें करी गोड न ज़ाणे द्वंद्व मत्सर।

फळो ज़ळो ज़या एक करुनि हि न बांधिला ॥ ४ - २२॥

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः ।

यज्ञाय आचरतः कर्म समग्रम् प्रविलीयते ॥ ४ - २३॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
गतसङ्गस्य	Gata-Sangasya	one who is devoid of attachment	जिस की आसक्ति सर्वथा नष्ट हो गयी है	ज्याची आसक्ती संपूर्णपणे नष्ट झालेली आहे
मुक्तस्य	Muktasya	of the liberated	जो देहाभिमान और ममतासे रहित हो गया है	(जो देहाभिमान व ममत्व यांच्यापासून) मुक्त झाला आहे
ज्ञानावस्थित-चेतसः	Dnyana-Avasthita-ChetasaH	whose mind is established in knowledge	जिस का चित्त निरन्तर परमात्मा के ज्ञान में स्थित रहता है (ऐसे केवल)	ज्याचे चित्त निरंतर परमात्म्याच्या ज्ञानामध्ये स्थित राहते
यज्ञाय	Yadnyaya	for sacrifice	यज्ञसम्पादन के लिये	केवळ यज्ञ संपादन करण्यासाठी
आचरतः	AacharataH	acting	(कर्म) करनेवाले मनुष्य के	जो कर्म करीत आहे अशा माणसाचे
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
समग्रम्	Samagram	whole	सम्पूर्ण	संपूर्ण
प्रविलीयते	Pravileeyate	is dissolved	भलीभाँति विलीन हो जाते हैं	पूर्णपणे विलीन होऊन जाते

अन्वय :- गतसङ्गस्य ज्ञानावस्थितचेतसः यज्ञाय आचरतः मुक्तस्य कर्म समग्रम् प्रविलीयते ॥ ४ - २३॥

English translation:-

One who is devoid of attachment, liberated, with mind established in knowledge, performing every task as a sacrifice, his entire action melts away.

हिन्दी अनुवाद :-

जिसकी आसक्ति सर्वथा नष्ट हो गयी है, जो देहाभिमान और ममता से रहित हो गया है, जिसका चित्त निरन्तर परमात्मा के ज्ञान में स्थित रहता है - ऐसा केवल यज्ञसम्पादन के लिये कर्म करनेवाले मनुष्य के सम्पूर्ण कर्म भलीभाँति विलीन हो जाते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याची (कर्म व फळ याविषयीची) लालसा गळून पडली आहे, जो (अहंकार व ममत्व आदी दोषांपासून) मुक्त झाला आहे, ज्याचे मन नेहमी (परमात्मज्ञानात) स्थिर आहे अशा केवळ यज्ञासाठी कर्म करणाऱ्या पुरुषाचे कर्म (फळासह) पूर्णपणे लयास जाते.

विनोबांची गीताई :-

ज्ञानांत बैसली वृत्ति संग सोडूनि मोकळा।
यज्ञार्थ करितो कर्म ज्ञाय सर्व जिरूनि तें ॥ ४ - २३॥

ब्रह्म अर्पणम् ब्रह्म हविः ब्रम्हाग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।

ब्रह्म एव तेन गन्तव्यम् ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ ४ - २४॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ब्रह्म	Brahma	Brahman	ब्रह्म है (और)	ब्रह्म
अर्पणम्	ArpaNam	act of offering	(जिस यज्ञ में)अर्पण अर्थात् स्रुवा आदि (भी)	(ज्या यज्ञात) अर्पण
ब्रह्म	Brahma	Brahman	ब्रह्म है (और)	ब्रह्म
हविः	HaviH	The oblation (the purified butter-Ghee)	हवन किये जाने योग्य द्रव्य (भी)	हवन करण्यास योग्य असे द्रव्य (सुद्धा)
ब्रम्हाग्नौ	Brahma-Agnau	In the fire of Brahman	ब्रह्मरूप अग्नि में	ब्रह्मरूप अग्नीमध्ये
ब्रह्मणा	BrahmaNaa	by Brahman	ब्रह्मरूप कर्ता के द्वारा	ब्रह्मरूप अशा कर्त्याच्या द्वारा
हुतम्	Hutam	is offered	आहुति देने की क्रिया (भी ब्रह्म है)	आहुती देणे (ही क्रिया सुद्धा ब्रह्म आहे)
ब्रह्म	Brahma	Brahman	ब्रह्म है	ब्रह्म
एव	Eva	verily (only)	ही है	च (केवळ)
तेन	Tena	by him	उस	त्या
गन्तव्यम्	Gantavyam	shall be reached	प्राप्त किये जाने योग्य (फल भी)	प्राप्त करून घेण्यास योग्य (असे फळ सुद्धा)
ब्रह्मकर्म-समाधिना	Brahma-Karma-Samaadhinaa	by the man who is absorbed in the action which is Brahman	ब्रह्मकर्म में स्थित रहनेवाले योगी द्वारा	ब्रह्मकर्मामध्ये स्थित असणाऱ्या योग्याला

अन्वय :-

ब्रह्म अर्पणम् , ब्रह्म हविः , ब्रम्हाग्नौ ब्रह्मणा हुतम् , ब्रह्मकर्मसमाधिना तेन ब्रह्म एव गन्तव्यम् ॥ ४ - २४ ॥

English translation:-

The act of offering is Brahman, the oblation is Brahman, offered by Brahman in the fire of Brahman, by seeing Brahman in action; and thus Brahman verily shall be reached by him.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस यज्ञ में अर्पण अर्थात् स्रुवा आदि भी ब्रह्म है और हवन किये जानेयोग्य द्रव्य भी ब्रह्म है तथा ब्रह्मरुप कर्ता के द्वारा ब्रह्मरुप अग्नि में आहुति देनारुप क्रिया भी ब्रह्म है - उस ब्रह्मकर्म में स्थित रहने वाले योगी द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य फल भी ब्रह्म है ।

मराठी भाषान्तर :-

अर्पण म्हणजे हवनक्रिया ब्रह्म , हवि म्हणजे हवनद्रव्य ब्रह्म, हवनाग्नी ब्रह्म आणि हवन करणाराही ब्रह्म , ह्याप्रमाणे सर्व कर्म ब्रह्मात्मक झाले अशी समबुद्धी झाल्यावर मिळणारे फळही ब्रह्मच होय .

विनोबांची गीताई :-

ब्रह्मांत होमिलें ब्रह्म ब्रह्मानें ब्रह्म लक्षुनी ।
ब्रह्मीं मिसळलें कर्म तेव्हां ब्रह्म चि पावला ॥ ४ - २४॥

दैवम् एव अपरे यज्ञम् योगिनः पर्युपासते ।

ब्रह्माग्नौ अपरे यज्ञम् यज्ञेन एव उपजुह्वति ॥ ४ - २५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
दैवम्	Daivam	to Gods	देवताओं के पूजनरूप	देवतांचे पूजन रूपी
एव	Eva	only	ही	केवळ
अपरे	Apare	some	दूसरे	दुसरे (योगी लोक)
यज्ञम्	Yadnyam	sacrifice	यज्ञ का	(आत्मरुप) यज्ञाचे
योगिनः	YoginaaH	Yogis	योगीजन	योगी (लोक)
पर्युपासते	Paryupaasate	perform	भलीभाँति अनुष्ठान किया करते हैं	चांगल्याप्रकारे अनुष्ठान करतात
ब्रह्माग्नौ	Brahmagnau	in the fire of Brahman	परब्रह्म परमात्मारूप अग्नि में (अभेददर्शनरूप)	परब्रह्म परमात्मारुप अग्नीमध्ये (अभेद दर्शनरुप)
अपरे	Apare	others	दूसरे	दुसरे (योगी लोक)
यज्ञम्	Yadnyam	sacrifice	आत्मरूप यज्ञ का	आत्मरुप यज्ञाचे
यज्ञेन	Yadnena	by sacrifice	यज्ञ के द्वारा	यज्ञाच्या द्वारे
एव	Eva	even	ही	च
उपजुह्वति	Upajuhvati	offer as sacrifice	हवन किया करते हैं	हवन करतात

अन्वय :-

अपरे योगिनः दैवम् एव यज्ञम् पर्युपासते ; अपरे ब्रह्माग्नौ यज्ञेन यज्ञम् एव उपजुह्वति ॥ ४ - २५ ॥

English translation:-

Some Yogis perform sacrifice to gods; others perform sacrifice by offering sacrifice itself in the fire of Brahman.

हिन्दी अनुवाद :-

दूसरे योगीजन देवताओं के पूजनरुप यज्ञ का ही भलीभाँति अनुष्टान किया करते हैं और अन्य योगीजन परब्रह्म परमात्मारुप अग्नि में अभेददर्शनरुप यज्ञ के द्वारा ही आत्मरुप यज्ञ का हवन किया करते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

काही योगी देवादिकांच्या उद्देशाने यज्ञ करतात तसेच दुसरे काही योगी ब्रह्मरूप अग्नीमध्ये (स्वाध्यायरूपी) यज्ञाने यज्ञाचे हवन करतात .

विनोबांची गीताई :-

देवताराधनें यज्ञ योगी कोणी अनुष्ठिती।
ब्रह्माग्नींत तसे कोणी यज्ञें यज्ञत्व ज़ाळिती ॥ ४ - २५ ॥

श्रोत्रादीनि इन्द्रियाणि अन्ये संयमाग्निषु जुह्वति ।

शब्दादीन् विषयान् अन्ये इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ॥ ४ - २६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्रोत्रादीनि	Shrotra-Adeeni	hearing etc.	श्रोत्र आदि	कान इत्यादी
इन्द्रियाणि	Indriyaani	senses	समस्त इन्द्रियों को	सर्व इंद्रियांचे
अन्ये	Anye	others	दूसरे (योगीलोग)	दुसरे (योगी जन)
संयमाग्निषु	Sanyama-Agnishu	in the fire of restraint	संयमरूप अग्नियों में	संयमरुपी अग्नीमध्ये
जुह्वति	Juhvati	sacrifice	हवन किया करते हैं (और)	हवन करतात (आणि)
शब्दादीन्	Shabdaa-deen	sound etc.	शब्दादि	शब्द इत्यादी
विषयान्	sense objects	sense objects	समस्त विषयों को	विषयांचे
अन्ये	Anye	others	दूसरे (योगीलोग)	दुसरे (योगीलोक)
इन्द्रियाग्निषु	Indriya-Agnishu	in the fire of the senses	इन्द्रियरूप अग्नियों में	इंद्रियरुपी अग्नीमध्ये
जुह्वति	Juhvati	sacrifice	हवन किया करते हैं	हवन करतात

अन्वय :-

अन्ये श्रोत्रादीनि इन्द्रियाणि संयमाग्निषु जुह्वति, अन्ये शब्दादीन् विषयान् इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ॥ ४ - २६ ॥

English translation:-

Some offer hearing and other senses as sacrifice in the fire of restraint, while others offer sound and other sense-objects as sacrifice in the fire of the senses.

हिन्दी अनुवाद :-

अन्य योगीजन श्रोत्र आदि समस्त इन्द्रियों को संयमरुप अग्नियों में हवन किया करते हैं और दूसरे योगीलोग शब्दादि समस्त विषयों को इन्द्रियरुप अग्नियों में हवन किया करते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

दुसरे काही योगी कान इत्यादी ज्ञानेंद्रियांचे संयमरूप अग्नीमध्ये हवन करतात तर दुसरे काही योगी शब्द इत्यादी विषयांचे इंद्रियरूप अग्नीत हवन करतात.

विनोबांची गीताई :-

श्रोत्रादि इंद्रियें कोणी संयमाग्नींत होमिती।
कोणी विषय शब्दादि इंद्रियाग्नींत अर्पिती ॥ ४ - २६ ॥

सर्वाणि इन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि च अपरे ।

आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥ ४ - २७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्वाणि	Sarvaani	all	सम्पूर्ण	सर्व
इन्द्रियकर्माणि	Indriya-Karmaani	functions of senses	इन्द्रियों की क्रियाओं को	इंद्रियांच्या क्रिया
प्राणकर्माणि	Prana-Karmaani	Functions of breath (vital air energy)	प्राणों की क्रियाओं को	प्राणांच्या सर्व क्रिया
च	Cha	and	और	आणि
अपरे	Apare	others	कई अन्य पुरुष	दुसरे (योगीलोक)
आत्मसंयमयोगाग्नौ	Attma-Sanyama-Yogagnau	in the fire of yoga of self-restraint	आत्मसंयम योगरूप अग्नि में	आत्मसंयमयोगरुपी अग्नीमध्ये
जुह्वति	Juvhati	sacrifice	हवन किया करते हैं	हवन करतात
ज्ञानदीपिते	Dnyaana-Deepite	kindled by knowledge	ज्ञान से प्रकाशित	ज्ञानाने प्रकाशित झालेल्या

अन्वय :-

अपरे ज्ञानदीपिते आत्मसंयमयोगाग्नौ सर्वाणि इन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि च जुह्वति ॥ ४ - २७ ॥

English translation:-

Others offer all the functions of the senses and the functions of breath involving the vital life – air energy into the fire of yoga of self-restraint, kindled by wisdom.

हिन्दी अनुवाद :-

दूसरे योगीजन इन्द्रियों की सम्पूर्ण क्रियाओं को और प्राणों की समस्त क्रियाओं को ज्ञान से प्रकाशित आत्मसंयम योगरुप अग्नि में हवन किया करते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

इतर काही योगी इंद्रियांच्या सर्व क्रिया आणि प्राणांच्या सर्व क्रिया यांचे ज्ञानाने प्रकाशित झालेल्या मनोनिग्रहरूपी अग्नीत हवन करतात.

विनोबांची गीताई :-

प्राणेंद्रिय क्रिया कोणी सर्व होमूनि टाकिती।
चिंतनानें समाधीस अंतरीं चेतवूनियां ॥ ४ - २७ ॥

द्रव्ययज्ञाः तपोयज्ञाः योगयज्ञाः तथा अपरे।

स्वाध्यायज्ञानयज्ञाः च यतयः संशितव्रताः ॥ ४ - २८॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
द्रव्ययज्ञाः	Dravya-YadnyaaH	those who offer wealth as sacrifice	द्रव्य-सम्बन्धी यज्ञ करनेवाले (हैं कितने ही)	द्रव्यरुपीयज्ञ करणारे (कित्येकजण)
तपोयज्ञाः	Tapo-YadnyaaH	those who offer austerity as sacrifice	यज्ञ करनेवाले हैं	तपस्यारुपी यज्ञ करणारे
योगयज्ञाः	Yoga-YadnyaaH	those who offer yoga as sacrifice	योगरूप यज्ञ करनेवाले हैं	योगरुपी यज्ञ करणारे
तथा	Tathaa	thus	तथा	तसेच
अपरे	Apare	others	कई अन्य पुरुष	दुसरे काही पुरुष
स्वाध्याय-ज्ञानयज्ञाः	Svadhyaaya-Dyaana-YadnyaaH	those who offer study and wisdom as sacrifice	स्वाध्यायरूप ज्ञानयज्ञ करनेवाले हैं	स्वाध्यायरूप ज्ञानयज्ञ करणारे
च	Cha	and	और (कितने ही)	आणि
यतयः	YatataH	ascetics / persons of self restraint	यत्नशील पुरुष	प्रयत्नशील पुरुष
संशितव्रताः	Sanshita-VrataaH	persons of rigid vows	अहिंसादि तीक्ष्ण व्रतोंसे युक्त	(अहिंसा इत्यादी) अत्यंत कठोर व्रते करणारे

अन्वय :-

अपरे संशितव्रताः द्रव्ययज्ञाः तपोयज्ञाः योगयज्ञाः तथा च स्वाध्यायज्ञानयज्ञाः यतयः (सन्ति) ॥ ४ - २८ ॥

English translation:-

Some perform sacrifice with material possessions; some offer sacrifice in the form of austerities; others sacrifice through the practice of Yoga; while some striving souls, observing austere vows, perform sacrifice in the form of wisdom via the study of sacred texts.

हिन्दी अनुवाद :-

कई पुरुष द्रव्यसम्बन्धी यज्ञ करनेवाले हैं कितने ही तपस्यारूप यज्ञ करनेवाले हैं तथा दूसरे कितने ही योगरूप यज्ञ करनेवाले हैं और कितने ही अहिंसादि तीक्ष्ण व्रतोंसे युक्त यत्नशील पुरुष स्वाध्यायरूप ज्ञानयज्ञ करनेवाले हैं।

मराठी भाषान्तर :-

दुसरे कोणी अगदी कठोर व्रत करणारे , द्रव्याने यज्ञ करणारे , तपाने यज्ञ करणारे , योगाने यज्ञ करणारे आणि स्वाध्यायाने यज्ञ करणारे यती असतात.

(यज्ञ म्हणजे निरपेक्ष लोककल्याण)

विनोबांची गीताई :-

द्रव्यें जपें तपें योगें चिंतनें वा अशापरी।

संयमी यजिती यज्ञ व्रतें प्रखर राखुनी ॥ ४ - २८ ॥

अपाने जुह्वति प्राणम् प्राणे अपानम् तथा अपरे ।

प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः ॥ ४ - २९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अपाने	Apaane	in incoming breath	अपानवायु में	अपान वायूमध्ये
जुह्वति	Juvhati	sacrifice	हवन करते हैं	हवन करतात
प्राणम्	PraaNam	outgoing breath	प्राणवायु को	प्राण वायूचे
प्राणे	PraaNe	In outgoing breath	प्राणवायु में	प्राण वायूमध्ये
अपानम्	Apaanam	incoming breath	अपानवायु को (हवन करते हैं तथा)	अपान वायूचे (हवन करतात)
तथा	Tathaa	Thus	वैसे ही अन्य योगीजन	त्याचप्रमाणे इतर (योगीलोक)
अपरे	Apare	Others	अन्य कितने ही	आणखी दुसरे (कितीतरी योगीजन)
प्राणापान-गती	PraaNaa-Paana-Gatee	in the course of PraNa and Apaana	प्राण और अपान की गति को	प्राण आणि अपान यांच्या गतीचा
रुद्ध्वा	Ruddhvaa	having restrained	रोककर	अवरोध करुन (अडवून)
प्राणायाम-परायणाः	PraaNaayaam - ParaayaNaaH	absorbed in PraaNa-yaama (breath control)	प्राणायाम में व्यतित पुरुष	प्राणायाम परायण पुरुष

अन्वय :-

तथा अपरे अपाने प्राणम् प्राणे अपानम् जुह्वति । (तथा अपरे) प्राणापानगती रुद्-ध्वा प्राणायामपरायणाः (सन्ति) ॥ ४ - २९ ॥

English translation:-

Yet others offer as sacrifice Praana (outgoing breath) into Apaana (incoming breath) and sacrifice Apaana (incoming breath) into Praana (outgoing breath); restraining the courses of Praana (outgoing breath) and Apaana (incoming breath) some are absorbed in Praanaayaama (breath control).

हिन्दी अनुवाद :-

दूसरे कितने ही योगीजन अपानवायु में प्राणवायु को हवन करते हैं वैसे ही अन्य योगीजन अपानवायु को प्राणवायु में हवन करते हैं ; तथा प्राणायामपरायण योगीजन प्राण और अपान की गति को रोकते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

दुसरे काही साधक अपानवायूत प्राणाला आणि त्याचप्रमाणे प्राणवायूत अपानाला हवन करतात . तसेच काही प्राण व अपान यांच्या गतीचा निरोध करून प्राणायामात निमग्न होतात.

विनोबांची गीताई :-

होमिती एकमेकांत कोणी प्राण अपान ते ।
रोधूनि गति दोहोंची प्राणायामास साधिती ॥ ४ - २९ ॥

अपरे नियताहाराः प्राणान् प्राणेषु जुह्वति ।

सर्वे अपि एते यज्ञविदः यज्ञक्षपितकल्मषाः ॥ ४ - ३० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अपरे	Apare	others	दूसरे (कितने ही योगीजन)	दुसरे (योगीजन)
नियताहाराः	Niyata-aahaaraaH	of regulated food	नियमित आहार करनेवाले	नियमित आहार करणारे
प्राणान्	PraaNaan	life breaths	प्राणों को	प्राणांचे
प्राणेषु	PraaNeShu	life breaths	प्राणों में (ही)	प्राणामध्येच
जुह्वति	Juvhati	sacrifice	हवन किया करते हैं	हवन करतात
सर्वे	Sarve	all	सभी	सर्व
अपि	Api	also	तथा	(साधक) ही
एते	Ete	these	ये	हे
यज्ञविदः	Yadnya-VidaH	knowers of sacrifice	यज्ञों को जाननेवाले हैं	यज्ञ जाणणारे
यज्ञ-क्षपित-कल्मषाः	Yadnya-Kshapita-KalmaShaaH	whose sins are destroyed by sacrifice	यज्ञों द्वारा पापों का नाश कर देनेवाले	यज्ञांद्वारे पापांचा नाश झालेले

अन्वय :-

अपरे नियताहाराः प्राणान् प्राणेषु जुह्वति । एते सर्वे अपि यज्ञविदः यज्ञक्षपितकल्मषाः (सन्ति) ॥ ४ - ३० ॥

English translation:-

Still others of regulated food habit offer in the Pranaas (life governing breaths) the functions there of. All these are knowers of Yadnya i.e. sacrifice and by sacrifice have destroyed their sins.

हिन्दी अनुवाद :-

अन्य कितने ही नियमित आहार करनेवाले योगीजन प्राणों को प्राणों में हवन किया करते है । ये सभी साधक यज्ञों द्वारा पापों का नाश कर देनेवाले और यज्ञों को जाननेवाले हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

दुसरे काही योगी आहार नियमित करून प्राणातच प्राणांचे हवन करतात ते सर्वही यज्ञ जाणणारे व यज्ञाने आपल्या पापाचा नाश करून घेणारे होत .

विनोबांची गीताई :-

प्राणांत होमिती प्राण कोणी आहार तोडुनी ।
यज्ञ - वेत्ते चि हे सारे यज्ञानें दोष ज़ाळिती ॥ ४ - ३० ॥

यज्ञशिष्टामृतभुजः यान्ति ब्रह्म सनातनम् ।

न अयम् लोकः अस्ति अयज्ञस्य कुतः अन्यः कुरुसत्तम ॥ ४ - ३१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यज्ञशिष्टा- मृतभुजः	Yadna- ShiShta- Amruta- bhujaH	eaters of nectar – the remnant of sacrifice	यज्ञ से बचे हुए अमृत का अनुभव करनेवाले (योगीजन)	यज्ञ झाल्यावर शिल्लक राहिलेल्या अमृताचा अनुभव घेणारे (योगी लोक)
यान्ति	Yaanti	go	प्राप्त होते हैं	जातात
ब्रह्म	Brahma	Brahman	परब्रह्म परमात्मा को	परब्रह्म परमात्म्याप्रत
सनातनम्	Sanaatana m	eternal	सनातन	सनातन
न	Na	not	नहीं	नाही
अयम्	Ayam	this	यह	हा
लोकः	LokaH	world	मनुष्य-लोक भी (सुखदायक)	मनुष्य-लोक (सुखदायक)
अस्ति	Asti	is	है (फिर)	राहतो
अयज्ञस्य	Ayadnyasya	of the non-sacrificer	यज्ञ न करनेवाले (पुरुष के लिये)	यज्ञ न करणाऱ्या (पुरुषासाठी)
कुतः	KutaH	how	कैसे (सुखदायक हो सकता है)	कसा बरे (सुखदायक होऊ शकेल ?)
अन्यः	AnyaH	other	परलोक	परलोक
कुरुसत्तम	Kurusattam	O best of the Kurus !	हे कुरुश्रेष्ठ अर्जुन !	हे कुरुश्रेष्ठ अर्जुना !

अन्वय :- हे कुरुसत्तम ! यज्ञशिष्टामृतभुजः सनातनम् ब्रह्म यान्ति । अयज्ञस्य अयम् लोकः न अस्ति कुतः अन्यः ? ॥ ४ - ३१ ॥

English translation:-

O best of the Kurus / Arjuna , eaters of nectar, the remnant of sacrifice, go to the eternal Brahman. This world is not for the non sacrificer, how then the other?

हिन्दी अनुवाद :-

हे कुरुश्रेष्ठ अर्जुन ! यज्ञ से बचे हुए अमृत का अनुभव करनेवाले योगीजन सनातन परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं और यज्ञ न करनेवाले पुरुष के लिये तो यह मनुष्यलोक भी सुखदायक नहीं है ; फिर परलोक कैसे सुखदायक हो सकता है ?

मराठी भाषान्तर :-

हे कुरुश्रेष्ठ अर्जुना ! यज्ञातून शिल्लक राहिलेल्या प्रसादरुपी अमृताचे सेवन करणारे योगी सनातन परब्रह्म परमात्याला पावतात . यज्ञ न करणाऱ्या पुरुषाला हा मनुष्यलोक सुद्धा सुखदायक होत नाही तर मग परलोक कसा सुखदायक होईल ?

विनोबांची गीताई :-

यज्ञ शेषामृतें धाले पावले ब्रह्म शाश्वत ।
न यज्ञाविण हा लोक कोठूनि पर लोक तो ॥ ४ - ३१ ॥

एवम् बहुविधाः यज्ञाः विततः ब्रह्मणः मुखे ।

कर्मजान् विद्धि तान् सर्वान् एवम् ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ॥ ४ - ३२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार (और भी)	अशाप्रकारे
बहुविधाः	BahuvidhaaH	manifold	बहुत तरह के	नानाप्रकारचे
यज्ञाः	YadnyaaH	sacrifices	यज्ञ	यज्ञ
विततः	VitataaH	are spread	विस्तार से कहे गये हैं	विस्ताराने (सांगितले गेले आहेत)
ब्रह्मणः	BrahmaNaH	of Brahman	वेद की	वेदांच्या
मुखे	Mukhe	in mouth (in speech)	वाणी में	वाणीमध्ये
कर्मजान्	Karmajaan	born of action	मन इन्द्रिय और शरीर की क्रियाद्वारा सम्पन्न होनेवाले	मन इंद्रिय व शरीर यांच्या क्रियांद्वारे संपन्न होणारे
विद्धि	Viddhi	know	तुम जानो	(असे) तू जाण
तान्	Taan	them	उन	ते
सर्वान्	Sarvaan	all	सब को	सर्व
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार (तत्त्व से)	अशाप्रकारे (तत्त्वतः)
ज्ञात्वा	Dnyaatvaa	having known	जानकर (उन के अनुष्ठान द्वारा तुम कर्मबन्धन से सर्वथा)	जाणून (त्यांच्या अनुष्ठानाद्वारा संपूर्ण कर्मबंधनातून)
विमोक्ष्यसे	Vimokshase	(you) shall be liberated	मुक्त हो जाओगे	तू मुक्त होशील

अन्वय :-

एवम् बहुविधाः यज्ञाः ब्रह्मणः मुखे विततः (सन्ति , त्वम्) तान् सर्वान् कर्मजान् विद्धि । एवम् ज्ञात्वा (त्वम्) विमोक्ष्यसे ॥ ४ - ३२ ॥

English translation:-

Various Yadnyaas (sacrifices) such as these are spread out in the storehouse of the Vedas (before Brahman). Know them all to be born of action (Karma), you shall be liberated.

हिन्दी अनुवाद :-

इसी प्रकार और भी बहुत तरह के यज्ञ वेद की वाणी में विस्तार से कहे गये हैं। उन सबको तू मन , इन्द्रिय और शरीर की क्रियाद्वारा सम्पन्न होनेवाले जान , इस प्रकार तत्त्व से जानकर उन के अनुष्ठान द्वारा तुम कर्मबन्धन से सर्वथा मुक्त हो जाओगे।

मराठी भाषान्तर :-

याप्रमाणे अनेक प्रकारचे यज्ञ ब्रह्माच्या म्हणजे वेदाच्या मुखाने (वेदांमध्ये) विस्ताराने सांगितले आहेत . ते सर्व कर्मापासून उत्पन्न होतात याचे ज्ञान झाल्यावर , तू (संसारबंधनापासून) मुक्त होशील .

विनोबांची गीताई :-

विशेष बोलिले वेदें असे यज्ञ अनेक हे।
कर्मानें घडिले ज़ाण ज़ाणूनि सुटशील तूं ॥ ४ - ३२ ॥

श्रेयान् द्रव्यमयात् यज्ञात् ज्ञानयज्ञः परन्तप ।

सर्वम् कर्म अखिलम् पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥ ४ - ३३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्रेयान्	Shreyaan	superior	अत्यन्त श्रेष्ठ (है)	अधिक श्रेष्ठ (आहे)
द्रव्यमयात् यज्ञात्	Drvya-mayyat Yadnyaat	than sacrifice of material things	द्रव्यमय (वस्तुरुप) यज्ञ की अपेक्षा	द्रव्यमय (वस्तुरुप) यज्ञापेक्षा
ज्ञानयज्ञः	Dnyana-YadnyaH	sacrifice of wisdom	ज्ञानयज्ञ	ज्ञानयज्ञ
परन्तप	Parantapa	O scorcher of foes	शत्रू को पीडा देनेवाले	हे शत्रूला तापदायक अर्जुना !
सर्वम्	Sarvam	all	सम्पूर्ण	सर्व
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्मे
अखिलम्	Akhilam	Without exception	यावन्मात्र	सर्व
पार्थ	Paartha	O Arjuna !	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
ज्ञाने	Dnyaane	in wisdom	ज्ञान में	ज्ञानामध्ये
परिसमाप्यते	Pari-Samaapyate	is culminated	समाप्त हो जाते हैं	समाप्त होतात

अन्वय :- हे परन्तप ! द्रव्यमयात् यज्ञात् ज्ञानयज्ञः श्रेयान् । हे पार्थ ! सर्वम् अखिलम् कर्म ज्ञाने परिसमाप्यते ॥ ४ - ३३ ॥

English translation:-

O scorcher of foes, the sacrifice of wisdom is superior to the sacrifice of material objects. O Arjuna, without any exception, all actions are culminated in wisdom.

हिन्दी अनुवाद :-

हे परंतप अर्जुन ! द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा ज्ञानयज्ञ अधिक श्रेष्ठ है तथा सभी प्रकार के कर्म सम्पूर्णतः ज्ञान में समाप्त हो जाते हैं।

मराठी भाषान्तर :-

हे शत्रूला तापदायक अर्जुना, द्रव्याने साध्य होणाऱ्या यज्ञापेक्षा ज्ञानयज्ञ अधिक कल्याणकारक आहे; कारण हे अर्जुना, यच्चयावत् सर्व कर्मे ज्ञानात समाप्त होतात - म्हणजेच त्यांचे ज्ञानात पर्यवसान होते.

विनोबांची गीताई :-

द्रव्य यज्ञादिकांहूनि ज्ञान यज्ञ चि थोर तो ।
पावती सगळीं कर्में अंतीं ज्ञानांत पूर्णता ॥ ४ - ३३ ॥

तत् विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानम् ज्ञानिनः तत्त्वदर्शिनः ॥ ४ - ३४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तत्	Tat	that	उस ज्ञान को (तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर)	ते (ज्ञान तत्त्वदर्शी ज्ञानी माणसांच्या जवळ जाऊन)
विद्धि	Viddhi	know	(तुम) जान लो	(तू) जाणून घे
प्रणिपातेन	PraNipaatena	by long prostration	उन को भलीभाँति दण्डवत् प्रणाम करने से उनकी	(त्यांना) नम्र प्रणाम करून
परिप्रश्नेन	Pari-Prashena	by questioning	सरलतापूर्वक प्रश्न करने से	(त्यांना) सरळपणे प्रश्न करून
सेवया	Sevayaa	by service	सेवा करने से (और कपट छोडकर)	(त्यांची) सेवा करून
उपदेक्ष्यन्ति	Updeksyanti	will instruct	उपदेश करेंगे	(तुला) उपदेश करतील
ते	Te	to you	वे	ते
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	तत्त्वज्ञान का	तत्त्वज्ञान
ज्ञानिनः	DnyaninaH	the wise	ज्ञानी महात्मा (तुमको उस)	ज्ञानी महात्मे
तत्त्वदर्शिनः	Tattva-DarshinaH	who have realized the truth	परमात्मतत्त्व को भलीभाँति जाननेवाले	परमात्म - तत्त्व व्यवस्थितपणे जाणणारे

अन्वय :- प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया तत्त्वदर्शिनः ज्ञानिनः ज्ञानम् ते उपदेक्ष्यन्ति तत् (त्वम्) विद्धि ॥ ४ - ३४ ॥

English translation:-

Seek that enlightenment by prostrating, by questioning and by service; the wise who have realised the Truth will impart you that knowledge.

हिन्दी अनुवाद :-

उस ज्ञान को तुम ज्ञानदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ लो, उन को भलीभाँति दण्डवत् - प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और (कपट छोडकर सरलतापूर्ण) प्रश्न करने से वे परमात्मतत्त्व को भलीभाँति जाननेवाले ज्ञानी महात्मा तुम्हें उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

मराठी भाषान्तर :-

आचार्यांना साष्टांग नमस्कार करुन, त्यांची सेवा करुन, त्यांना विवेकयुक्त प्रश्न विचारुन त्यांच्याकडून ते ज्ञान तू समजून घे. ते तत्त्वज्ञानी तुला आत्मज्ञानाचा उपदेश करतील.

विनोबांची गीताई :-

सेवा करूनि तें ज्ञाण नम्र - भावें पुसूनियां।
ज्ञानोपदेश देतील ज्ञानी अनुभवी तुज ॥ ४ - ३४ ॥

यत् ज्ञात्वा न पुनः मोहम् एवम् यास्यसि पाण्डव ।

येन भूतानि अशेषेण द्रक्ष्यसि आत्मनि अथो मयि ॥ ४ - ३५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्	Yat	which	जिस को	जे
ज्ञात्वा	Dnyaatvaa	having known	जानकर	जाणल्यावर
न	Na	not	नहीं	नाही
पुनः	PunaH	again	फिर	पुन्हा
मोहम्	Moham	delusion	मोह को	मोहाप्रत
एवम्	Evam	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
यास्यसि	Yaasyasi	will get	प्राप्त होगा	तू जाशील
पाण्डव	PaaNDava	O Arjuna	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
येन	Yen	by which	जिस (ज्ञान के) द्वारा	ज्या (ज्ञानाच्या) द्वारा
भूतानि	Bhutaani	beings	सम्पूर्ण प्राणिमात्रों को	सर्व प्राणिमात्रांना
अशेषेण	AsheSheNa	all	निःशेष भाव से	संपूर्णपणे
द्रक्ष्यसि	Drakshyasi	(you) will see	तुम देखोगे	तू पाहशील
आत्मनि	Aatmani	in Self	(पहले) अपने में (और)	(प्रथम) आपल्यामध्ये
अथो	Atho	also	उसके बाद	सुद्धा
मयि	Mayi	in Me	मुझ परमात्मा में	मज परमात्म्यामध्ये

अन्वय :-

हे पाण्डव ! यत् ज्ञात्वा (त्वम्) पुनः एवम् मोहम् न यास्यसि , येन भूतानि अशेषेण आत्मनि अथो मयि द्रक्ष्यसि ॥ ४ - ३५ ॥

English translation:-

O Arjuna, knowing this, you will never ever fall into this trap of delusion. In such a state of Self realisation, you will notice all beings in the Self and also in Me.

हिन्दी अनुवाद :-

जिसको जानकर फिर तुम इस प्रकार मोह को नहीं प्राप्त हो जाओगे तथा हे अर्जुन जिस ज्ञान के द्वारा तुम सम्पूर्ण भूतों को निःशेषभाव से पहले अपने में और उसके बाद मुझ सच्चिदानन्दघन परमात्मा में देखोगे।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना , हे असे ज्ञान प्राप्त झाल्यावर , तुला पुनः अशाप्रकारे मोह होणार नाही ; ह्या ज्ञानाने सर्व प्राणिमात्र पूर्णपणे प्रथम आपल्या (जीवात्म्याच्या) ठायी व नंतर माझ्या (परमात्म्याच्या) ठायी पाहशील .

विनोबांची गीताई :-

ज्या ज्ञानानें असा मोह न पुन्हां पावशील तूं।
आत्म्यांत आणि माझ्यांत भूतें निःशेष देखुनी ॥ ४ - ३५ ॥

अपि चेत् असि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।

सर्वम् ज्ञानप्लवेन एव वृजिनम् सन्तरिष्यसि ॥ ४ - ३६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अपि	Api	even	भी	ही / सुद्धा
चेत्	Chet	if	यदि (तुम अन्य)	जरी
असि	Asi	(you) are	हो (तो भी तुम)	असलास
पापेभ्यः	PaapebhyaH	the sinners	पापियों से	पापी माणसांपेक्षा
सर्वेभ्यः	SarvebhyaH	than all	सब	सर्वांपेक्षा
पापकृत्तमः	Paapa-KruttamaH	most sinful	अधिक पाप करनेवाले	अधिक पापी
सर्वम्	Sarvam	all	सम्पूर्ण	संपूर्ण
ज्ञानप्लवेन	Dnyaana-Plavena	by raft of knowledge	ज्ञानरूप नौका द्वारा	ज्ञानरुपी नौकेने
एव	Eva	alone	निःसन्देह	निःसंशयपणे
वृजिनम्	Vrujinam	sin	पाप – समुद्र से	पाप (समुद्र)
सन्तरिष्यसि	San-TariShyasi	you shall cross over	(तुम) भलीभाँति तर जाओगे	(तू) चांगल्याप्रकारे तरून जाशील

अन्वय :-

(त्वम्) सर्वेभ्यः पापेभ्यः अपि पापकृत्तमः असि चेत् , सर्वम् वृजिनम् ज्ञानप्लवेन एव सन्तरिष्यसि ॥ ४ - ३६॥

English translation:-

Even if you are the most sinful of the sinners, you shall verily cross over all sin by the raft of knowledge.

हिन्दी अनुवाद :-

यदि तुम अन्य सब पापियों से भी अधिक पाप करनेवाले हो तो भी तुम ज्ञानरुप नौकाद्वारा निःसंदेह सम्पूर्ण पापरुपी – समुद्र को भलीभाँति पार कर जाओगे ।

मराठी भाषान्तर :-

जरी तू सर्व पाप्यांत अत्यंत पापी असलास तरीही , तू ज्ञानरुपी नौकेने , खात्रीने सर्व पापांतून (पापसमुद्रातून) , सहजतेने तरून जाशील .

विनोबांची गीताई :-

जरी पाप्यांमधें पापी असशील शिरो - मणि ।
तरी ह्या ज्ञान नौकेनें पाप तें तरशील तूं ॥ ४ - ३६॥

यथा एधांसि समिद्धः अग्निः भस्मसात् कुरुते अर्जुन ।

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा ॥ ४ - ३७॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यथा	Yathaa	as	जैसे	ज्याप्रमाणे
एधांसि	Edhaamsi	fuel	ईंधनों को	सर्पणाला
समिद्धः	SamidhaH	blazing	प्रज्वलित	प्रज्वलित
अग्निः	AgniH	fire	अग्नि	अग्नी
भस्मसात्	Bhasmasaat	reduced to ashes	भस्ममय	भस्ममय
कुरुते	Kurute	makes	कर देता है	करतो
अर्जुन	Arjuna	O Arjuna !	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
ज्ञानाग्निः	Dnyaana-AgniH	fire of knowledge	ज्ञानरूप अग्नि	ज्ञानरुपी अग्नी
सर्वकर्माणि	Sarva-KarmaaNi	all actions	सम्पूर्ण कर्मों को	संपूर्ण कर्मांना
भस्मसात्	Bhasmasaat	reduced to ashes	भस्ममय	भस्मसात
कुरुते	Kurute	makes	कर देता है	करुन टाकतो
तथा	Tathaa	so	वैसे ही	त्याप्रमाणे

अन्वय :-

हे अर्जुन ! यथा समिद्धः अग्निः एधांसि भस्मसात् कुरुते, तथा ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते ॥ ४ - ३७॥

English translation:-

O Arjuna, as the blazing fire reduces fuel to ashes, so does the fire of knowledge reduce all actions to ashes.

हिन्दी अनुवाद :-

क्योंकि हे अर्जुन! जैसे प्रज्वलित अग्नि ईंधनों को भस्ममय कर देती है, वैसे ही ज्ञानरुप अग्नि सम्पूर्ण कर्मों को भस्ममय कर देती है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! ज्याप्रमाणे पेटलेला अग्नी सर्पणाला जाळून टाकतो ; त्याप्रमाणे ज्ञानरुपी अग्नी सर्व कर्मांची राखरांगोळी करतो.

विनोबांची गीताई :-

संपूर्ण पेटला अग्नि काष्ठें टाकितो।
तसा ज्ञानाग्नि तो सर्व कर्मे ज़ाळूनि टाकितो ॥ ४ - ३७॥

न हि ज्ञानेन सदृशम् पवित्रम् इह विद्यते ।

तत् स्वयम् योगसंसिद्धः कालेन आत्मनि विन्दति ॥ ४ - ३८॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	not	नहीं	नाही
हि	Hi	verily	निःसन्देह (कुछ भी)	खात्रीपूर्वक (काहीही)
ज्ञानेन	Dnyaanena	by knowledge	ज्ञान के	ज्ञानाने
सदृशम्	Sadrusham	like	समान	समान / तुल्य
पवित्रम्	Pavitram	purifier	पवित्र करनेवाला	पावन (करणारे)
इह	Eha	here in this world	इस संसार में	या संसारात
विद्यते	Vidyate	is	है	असते
तत्	Tat	that	उस (ज्ञान को)	ते (ज्ञान)
स्वयम्	Svayam	itself	अपने आप (ही)	आपण स्वतःच
योगसंसिद्धः	Yoga-SansidhaH	perfected in yoga	कर्मयोग के द्वारा शुध्दान्तःकरण हुआ (मनुष्य)	कर्मयोगाने चित्तशुध्द झालेला (मनुष्य)
कालेन	Kaalena	in time	कितने ही काल से	दीर्घ काळाने
आत्मनि	Aatmani	in the Self	आत्मा में	आत्म्यामध्ये
विन्दति	Vindati	finds	पा लेता है	प्राप्त करून घेतो

अन्वय :-

हि इह ज्ञानेन सदृशम् पवित्रम् न विद्यते । तत् (ज्ञानम्) स्वयम् योगसंसिद्धः कालेन आत्मनि विन्दति ॥ ४ - ३८॥

English translation:-

Verily there is no purifier in this world like knowledge. He is the one perfected in Yoga, who realises it in his own heart in the due course of time.

हिन्दी अनुवाद :-

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करनेवाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है। उस ज्ञान को कितने ही काल से कर्मयोग के द्वारा शुद्ध अन्तःकरण हुआ मनुष्य अपने आप ही आत्मा में पा लेता है।

मराठी भाषान्तर :-

ज्ञानासारखे पावन (आत्मशुद्धी) करणारे या जगात दुसरे काहीही नाही . ते आत्मविषयक ज्ञान दीर्घकालाच्या योगाभ्यासाने चित्तशुद्ध झालेला साधक आपल्या ठायी (अंतःकरणात) योग्य काळी प्राप्त करुन घेतो .

विनोबांची गीताई :-

ज्ञानासम नसे कांहीं पवित्र दुसरें जगीं ।
योग - युक्त यथा - काळीं तें पावे अंतरीं स्वयें ॥ ४ - ३८॥

श्रध्दावान् लभते ज्ञानम् तत्परः संयतेन्द्रियः ।

ज्ञानम् लब्ध्वा पराम् शान्तिम् अचिरेण अधिगच्छति ॥ ४ - ३९॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्रध्दावान्	Shraddhaa-Vaan	the man of faith	श्रद्धावान् मनुष्य	श्रध्दाळू
लभते	Labhate	obtains / attains	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो
ज्ञानम्	Dnyaanam	Knowledge	ज्ञान को	ज्ञान
तत्परः	TatparaH	Devoted	साधनपरायण	साधन तत्पर
संयतेन्द्रियः	Sanyate-IndriyaH	who has subdued the senses	जितेन्द्रिय	जितेंद्रिय
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान को	ज्ञान
लब्ध्वा	Labdhvaa	having attained	प्राप्त होकर (वह)	प्राप्ती झाल्यावर (तो मनुष्य)
पराम्	Paraam	supreme	परम	श्रेष्ठ
शान्तिम्	Shaantim	peace	शान्ति को	शांती
अचिरेण	AchireNa	at once	विना विलम्ब के - तत्काल ही	विना विलंब / तत्काळ / लवकरच
अधिगच्छति	Adhi-Gachchhati	goes	प्राप्त हो जाता है	प्राप्त करून घेतो

अन्वय :-

श्रध्दावान् , तत्परः , संयतेन्द्रियः ज्ञानम् लभते । ज्ञानम् लब्ध्वा अचिरेण पराम् शान्तिम् अधिगच्छति ॥ ४ - ३९॥

English translation:-

The man of faith, the devoted and the master of his senses obtains knowledge. Having attained such knowledge he promptly gains Supreme peace.

हिन्दी अनुवाद :-

श्रद्धावान , भक्ति में अनुकुलित और इंद्रियों में संयमी मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है तथा ज्ञान को प्राप्त होकर वह विना विलम्ब के - तत्काल ही भगवत्प्राप्तिरुप परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

श्रद्धाळू , ज्ञानप्राप्तीची अतिशय तळमळ असणारा आणि इंद्रियांवर ताबा असणारा साधक हे ज्ञान प्राप्त करुन घेतो . ते ज्ञान प्राप्त झाल्यावर , लवकरच त्याला मोक्षरुपी शांती मिळते .

विनोबांची गीताई :-

श्रद्धेनें मेळवी ज्ञान संयमी नित्य सावध ।

ज्ञानानें शीघ्र तो पावे शांति शेंवटची मग ॥ ४ - ३९॥

अज्ञः च अश्रद्दधानः च संशयात्मा विनश्यति ।

न अयम् लोकः अस्ति न परः न सुखम् संशयात्मनः ॥ ४ - ४० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अज्ञः	AdnyaH	the ignorant	विवेकहीन	विवेकहीन
च	Cha	and	और	आणि
अश्रद्दधानः	A-Shraddha-DhaanaH	the faithless	श्रद्धारहित	श्रध्दारहित
च	Cha	and	और	आणि
संशयात्मा	Sanshaya-Aatmaa	the doubting self	संशययुक्त मनुष्य	(असा) संशयी मनुष्य
विनश्यति	Vinasyati	is ruined / destroyed	(परमार्थ से अवश्य) भ्रष्ट हो जाता है (ऐसे)	(परमार्थापासून निश्चितपणे) नाश पावतो
न	Na	not	न	नाही
अयम्	Ayam	this	यह	हा
लोकः	LokaH	world	लोक	पृथ्वी लोक
अस्ति	Asti	there is	है	असते
न	Na	not	न	नाही
परः	ParaH	other	परलोक है	परलोक
न	Na	not	न	नाही
सुखम्	Sukham	happiness	सुख (ही है)	सुख
संशयात्मनः	Sanshaya-AatmanaH	for the doubting self	संशययुक्त मनुष्य के लिये	संशयी माणसाला

अन्वय :-

अज्ञः च अश्रद्दधानः च संशयात्मा विनश्यति । संशयात्मनः अयम् लोकः न अस्ति , न परः (लोकः) न (च) सुखम् (अस्ति) ॥ ४ - ४० ॥

English translation:-

The ignorant, the man devoid of faith, the doubting self goes to eventual destruction. The doubting self has neither this world, nor the next (other) nor happiness.

हिन्दी अनुवाद :-

विवेकहीन और श्रद्धारहित संशययुक्त मनुष्य परमार्थ से अवश्य भ्रष्ट हो जाता है। ऐसे संशययुक्त मनुष्य के लिये न तो यह लोक है न ही परलोक है और न सुख है।

मराठी भाषान्तर :-

आत्म्याला न जाणणारा अज्ञानी , श्रद्धा नसणारा व संशयी मनुष्याचा नाश होतो. संशयी पुरुषाला हा मनुष्यलोक नाही , परलोक नाही व सुखशांतीही नाही .

विनोबांची गीताई :-

नसे ज्ञान नसे श्रद्धा संशयी नासला पुरा ।
न हा लोक न तो लोक न पावे सुख संशयी ॥ ४ - ४० ॥

योगसन्न्यस्तकर्माणम् ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम्

आत्मवन्तम् न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ॥ ४ - ४१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
योगसन्न्यस्त-कर्माणम्	Yoga-Sanyasta-KarmaaNam	one who has renounced actions by Yoga	जिस ने कर्मयोग की विधि से समस्त कर्मों का परमात्मा में अर्पण कर दिया है (और)	कर्मयोगाच्या द्वारा ज्याने विधिपूर्वक सर्व कर्मे परमात्म्याला अर्पण केलेली आहेत
ज्ञानसञ्छिन्न-संशयम्	Dnyaana-Sanchinna-Sanshayam	one whose doubts are rent asunder by knowledge	जिस ने विवेकद्वारा समस्त संशयों का नाश कर दिया है (ऐसे)	सम्यक ज्ञानाने ज्याने सर्व संशयांचा नाश केलेला आहे
आत्मवन्तम्	Aatma-Vantam	possessing the self	वश में किये हुए अन्तःकरणवाले पुरुष को	(ज्याने अंतःकरण वश करून घेतले आहे अशा) आत्मज्ञानी पुरुषाला
न	Na	not	नहीं	नाही
कर्माणि	KarmaaNi	actions	कर्म	कर्म
निबध्नन्ति	Nibadhnanti	bind	बाँधते	बध्द करतात
धनंजय	Dhananjaya	O Arjuna !	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :-

हे धनंजय ! योगसन्न्यस्तकर्माणम् ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम् आत्मवन्तम् कर्माणि न निबध्नन्ति ॥ ४ - ४१ ॥

English translation:-

With actions absolved in Yoga, whose doubts are rent asunder by knowledge, O Arjuna ! actions do not bind him who is poised in the Self.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जिस ने कर्मयोग की विधि से समस्त कर्मों का परमात्मा में अर्पण कर दिया है और जिस ने विवेकद्वारा सर्व संशयों का नाश कर दिया है ऐसे वश में किये हुए अन्तःकरणवाले पुरुष को कर्म नहीं बाँधते ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना , ज्याने कर्मयोगाने सर्व कर्मे परमात्म्याला अर्पण केली आहेत आणि ज्ञानयोगाने सर्व संशयांचा नाश केला आहे ; अशा अंतःकरणावर ताबा असणाऱ्या आत्मज्ञानी पुरुषाला , कर्मे बंधनकारक होत नाहीत .

विनोबांची गीताई :-

योगानें झाडिलीं कर्में ज्ञानें संशय तोडिले ।

जो सावधान आत्म्यांत कर्में त्यास न बांधिती ॥ ४ - ४१ ॥

तस्मात् अज्ञानसम्भूतम् हृत्स्थम् ज्ञानासिना आत्मनः ।

छित्वा एनम् संशयम् योगम् आतिष्ठ उत्तिष्ठ भारत ॥ ४ - ४२॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तस्मात्	Tasmaat	therefore	इसलिये	म्हणून
अज्ञान-सम्भूतम्	Adnyaana-Sambhootam	born out of ignorance	अज्ञानजनित	अज्ञानाने निर्माण झालेल्या
हृत्स्थम्	Hrutstham	dwelling in heart	हृदय में	हृदयामध्ये असणाऱ्या
ज्ञानासिना	Dnyaana-Aasinaa	by the sword of knowledge	विवेकज्ञानरुप तलवारद्वारा	(विवेक) ज्ञानरूपी तरवारीने
आत्मनः	AatmanaH	of Self	अपने	आपल्या
छित्वा	Chhitvaa	having cut	छेदन कर	कापून टाकून
एनम्	Enam	this	इस	या
संशयम्	Sanshayam	doubt	संशय का	संशयाला
योगम्	Yogam	in Yoga	समत्वरुप कर्मयोग में	समत्वरूप कर्मयोगात
आतिष्ठ	AatiShTha	take refuge	(तुम) स्थित हो जाओ (और युद्ध के लिये)	स्थित होऊन जा
उत्तिष्ठ	UttiShTha	arise	खड़े हो जाओ	(आणि युध्दासाठी) उठून उभा रहा
भारत	Bhaarata	O Arjuna !	हे भरतवंशी अर्जुन !	हे भरतवंशी अर्जुना !

अन्वय :-

हे भारत ! तस्मात् अज्ञानसम्भूतम् हृत्स्थम् आत्मनः एनम् संशयम् ज्ञानासिना छित्वा योगम् आतिष्ठ , (युध्दाय च) उत्तिष्ठ ॥ ४ - ४२॥

English translation:-

O Arjuna! therefore cutting asunder with the sword of knowledge the ignorance born doubt of the Self, dwelling in your heart, be established in Yoga and stand up.

हिन्दी अनुवाद :-

इसलिये हे भरतवंशी अर्जुन ! तुम हृदय में स्थित इस अज्ञानजनित अपने संशय का विवेकज्ञानरुप तलवार द्वारा छेदन कर , समत्वरुप कर्मयोग में स्थित हो जाओ और युद्ध के लिये खड़े हो जाओ ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! अज्ञानाने निर्माण झालेल्या अंतःकरणातील संशयाला , ज्ञानरुपी तलवारीने छाटून , तू कर्मयोगाचे आचरण कर आणि युद्धाला उभा ठाक .

विनोबांची गीताई :-

म्हणूनि अंतरांतील अज्ञान - कृत संशय ।

तोडुनि ज्ञान खड्-गानें ऊठ तूं योग साधुनी ॥ ४ - ४२॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम् योगशास्त्रे

श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसंन्यासयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the fourth discourse designated as "the Yoga of Renumciation of Action in Wisdom".

चवथ्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

हराया भूभारा अमित अवतारांसि धरितों ।

विनाशूनी दुष्टां सतत निजदासां सुखवितों ॥

नियंता मी भूतां समजुनि असें कर्म मजसी ।

समर्पी तू कर्मीं मग तिळभरी बद्ध नससी ॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।

या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे. स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे. मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।

पडतां रडतां घेई उचलूनि कडेवरी ॥